KIRAN INSTITUTE OF
CAREER EXCELLENCE

CTET

CENTRAL TEACHER ELIGIBILITY TEST

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

Text Book Approach to Child Development & Pedagogy

USEFUL FOR : DSSSB, REET, BTET, JTET, CGTET, MPTET, UPTET, HTET, SUPER TET, KVS एवं अन्य शिक्षक भर्ती परीक्षाओं के लिए उपयोगी

FULFILLMENT BY:
REPRO

17 CHAPTERS

Special Education

Himanshi Singh

KIRAN INSTITUTE OF CAREER EXCELLENCE

CTET

CENTRAL TEACHER ELIGIBILITY TEST

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

Text Book Approach to Child Development & Pedagogy

USEFUL FOR : DSSSB, REET, BTET, JTET, CGTET, MPTET, UPTET, HTET, SUPER TET, KVS एवं अन्य शिक्षक भर्ती परीक्षाओं के लिए उपयोगी

17 CHAPTERS

Special Education

Himanshi Singh

KIRAN INSTITUTE OF CAREER EXCELLENCE PVT. LTD. (KICX), DELHI PRESENTS
RU-67, Pitampura, Delhi-110034, Ph.: 9821874015, 9821643815
www.kicx.in

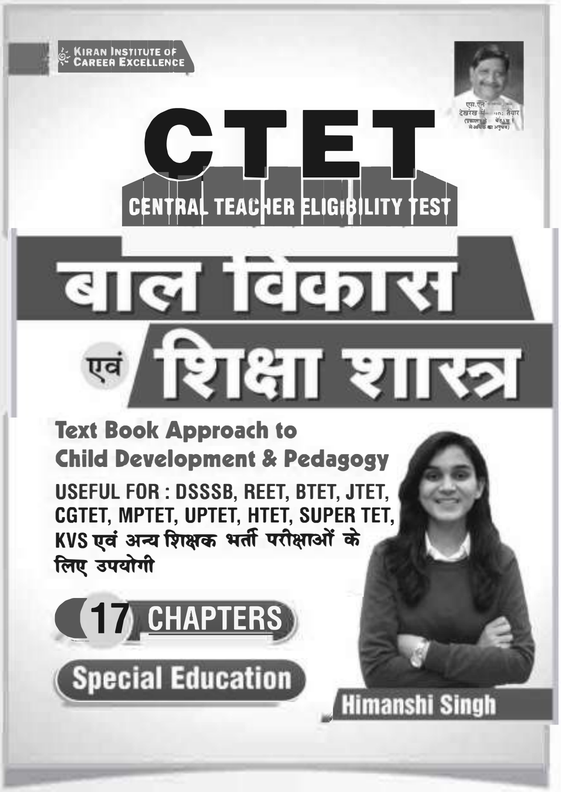

New Edition

The copyright of this book is entirely with the Kiran Institute of Career Excellence Pvt. Ltd. The reproduction of this book or a part of this will be punishable under the Copyright Act.

All disputes subject to Delhi jurisdiction.

Every possible effort has been made to ensure that the information contained in this book is accurate at the time of going to press, and the publishers and authors cannot accept responsibility for any errors or omissions, however caused.

No responsibility for loss or damage occasioned to any person acting, or refraining from action, as a result of the material in this publication can be accepted by the editor, the publisher or any of the authors.

Maps used in this book are not to scale

All Maps are Notional

© COPYRIGHT
KIRAN INSTITUTE OF CAREER EXCELLENCE PVT. LTD.

COMPILED BY
Think Tank of KICX

EDITING
Dr. L.B. Singh

ASSISTANCE
Sanket Sah, Achal Gupta

DESIGN & LAYOUT
KICX COMPUTER SECTION, New Delhi.

KIRAN INSTITUTE OF CAREER EXCELLENCE PVT. LTD.
RU-67, Opposite Power House Pitampura,
Delhi-110034,
Ph. : 9821874015, 9821643815
E-mail: sanket2000_us@yahoo.com
www.kiranprakashan.org
www.kiranprakashan.com

अनुक्रमणिका

क्रम.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	मनोविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान (Psychology & Education Psychology)	7-15
2.	प्राथमिक एवं प्रारंभिक स्कूली बच्चों का विकास (Primary & Elementary School Child Development)	16-30
3.	बुद्धि एवं सृजनात्मकता (Intelligence and Creativity)	31-43
4.	भाषा एवं विचार (Language & Thought)	44-52
5.	अधिगम : प्रक्रिया और सिद्धान्त (Learning : Process & Theory)	53-68
6.	शिक्षण प्रविधि एवं मूल्यांकन (Teaching Methodology & Evaluation)	69-86
7.	मनोभाव (संवेग) और अभिप्रेरणा (Emotion & Motivation)	87-100
8.	समावेशी शिक्षा की संकल्पना एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समझ (Concept of Inclusive Education and Understanding Children with Special Needs)	101-123
9.	तंत्रिका तंत्र और शिक्षा मनोविज्ञान (Nervous System and Education)	124-139

10.	मानसिक विकृतियाँ एवं मनोचिकित्सा (Mental Disorders and Psychotherapies)	140-159
11.	चिंतन एवं समस्या-समाधान (Thinking and Problem Solving)	160-167
12.	मानव स्मृति एवं विस्मृति (Human Memory & Forgetting)	168-177
13.	मार्गदर्शन और परामर्शन (Guidance & Counselling)	178-190
14.	व्यक्तित्व (Personality)	191-205
15.	मनोविज्ञान एवं शिक्षा में शोध और सांख्यिकी का अध्ययन (Study of Research and Statistics in Psychology and Education)	206-217
16.	सामाजिक व्यवहार का मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Base of Social Behaviour)	218-233
17.	भारतीय शिक्षा प्रणाली : इतिहास एवं नीतियाँ (Educational System in India : History and Policies)	234-256

□ □ □

पुस्तक के बारे में

किरण बाल मनोविज्ञान आपके हाथ में है। शिक्षकों की नियुक्ति सम्बद्ध पाठ्यक्रम में मनोविज्ञान (बाल मनोविज्ञान/शिक्षाशास्त्र) अनिवार्य रूप से रखा गया है। शिक्षकों की नियुक्ति सभी राज्य सरकारों की प्राथमिकता और विशेषता रही है। इसलिए **B.ED**, एकीकृत **B.Ed,** से लेकर **CTET, UP-TET, H-TET, MP-TET, Bihar-TET** और **REET** आदि शिक्षा संबद्ध सभी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में एक तरह की समरूपता और एकात्मकता पायी जाती है। उदाहरण स्वरूप **CTET** के पाठ्यक्रम सम्बंधी मनोविज्ञान विषयान्तर्गत बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र में (प्राथमिक एवं प्रारंभिक स्कूली विद्यार्थी), समावेशी एवं विशेष शिक्षा, अधिगम, संवेग, अभिप्रेरणा, बुद्धि, भाषा एवं विचार, अधिगम के सिद्धान्त एवं विधियाँ, मूल्यांकन और पर्यावरण विज्ञान-सामाजिक विज्ञानों से संबंधित जो टॉपिक प्राधिकार द्वारा प्रदत्त है कमोवेस वे सभी टॉपिक अन्य सरकारों के सम्बद्ध अभिकरणों द्वारा शिक्षक नियुक्ति परीक्षा में पूछे जाते हैं।

इसी विषयवस्तु को ध्यान में रखकर हमने इस पुस्तक का विषयक्रम इस प्रकार रखा है :

1. मनोविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान
2. प्राथमिक एवं प्रारंभिक स्कूली बच्चों का विकास
3. बुद्धि एवं सृजनात्मकता
4. भाषा एवं विचार
5. अधिगम : प्रक्रिया और सिद्धान्त
6. शिक्षण प्रविधि एवं मूल्यांकन
7. मनोभाव (संवेग) और अभिप्रेरणा
8. समावेशी शिक्षा की संकल्पना एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समझ
9. तंत्रिका तंत्र और शिक्षा मनोविज्ञान
10. मानसिक विकृतियाँ एवं मनोचिकित्सा
11. चिंतन एवं समस्या-समाधान
12. मानव स्मृति एवं विस्मृति
13. मार्गदर्शन और परामर्शन
14. व्यक्तित्व
15. मनोविज्ञान एवं शिक्षा में शोध और सांख्यिकी का अध्ययन
16. सामाजिक व्यवहार का मनोवैज्ञानिक आधार
17. भारतीय शिक्षा प्रणाली : इतिहास एवं नीतियाँ

अंतः शिक्षण की शैली और सीखने की प्रवृति अनुसार यथासंभव डायग्राम, ग्राफ्स, सारणी और रेखाचित्रों के माध्यम से प्रस्तुतीकरण को आकर्षक बनाया गया है। कुछ पारिभाषिक शब्दावलियों एवं पदों की प्रस्तुति बॉक्स के अन्दर भी ध्यातव्य रूप से दी गई है। चैप्टर वाइज प्रश्नों और उनकी व्याख्यात्मक उत्तर की प्रस्तुति इस पुस्तक की परीक्षोपयोगी विशेषता है। इससे प्रतियोगी विद्यार्थी अपनी मनोविज्ञान सम्बन्धी समझ की कसौटी व बेसलाइन भी मान सकते हैं, क्योंकि ये प्रश्न (25) संख्या में थोड़े कम लग सकते हैं किंतु प्रदत्त प्रश्न पाठ्यक्रमानुसार और सटीक व्याख्यानुसार दिए गए हैं। पुस्तक पढ़ने-पढ़ाने के दौरान शिक्षक और विद्यार्थी स्वयं के मनोविज्ञान की जांच-परख भी कतिपय अध्यायों के आलोक में कर सकते है जैसा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 के दर्शन में वांछित है।

–प्रकाशक

उतिष्ठत।

utisthata

जाग्रत।

jãgrata

प्राप्य

prãpya

वरान्निबोधत।

varãnnibodhata

Arise!

Awake!

And stop not till

the goal is reached.

- Swami Vivekanand

1 मनोविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान (Psychology & Education Psychology)

मनोविज्ञान मन (Mind) का विषय है। विशेष ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। मन-मस्तिष्क से सारे व्यवहार निर्देशित होते हैं। इसीलिए मनोविज्ञान व्यवहारों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। यह दो शब्दों Psyche + logos अर्थात् आत्मा का अध्ययन से बना है।

हम मनोविज्ञान क्यों पढ़ते हैं, यह वह पहला प्रश्न है, जिसे व्यक्ति को स्वयं से पूछना चाहिए। मनोविज्ञान प्राणियों के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है। कुछ लोग सोचते हैं कि मनोवैज्ञानिक लोगों की आवश्यकताओं को समझ नहीं पाते पर वास्तव में वे सभी बातों और व्यवहार का अवलोकन करते हैं। अपने अवलोकनों से, वे व्यवहार के कारणों का पता लगाने की कोशिश करते हैं। सभी प्रकार की शारीरिक और मानसिक क्रियाएँ व्यवहार के ही रूप हैं। इसी कारण व्यवहार को व्यवस्थित करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने इसे चार व्यापक कारकों में विभाजित किया है–

(1) शारीरिक कारक–जैसे शरीर का आकार, लिंग, रूप रंग, जन्मजात गुण, पैतृक विशेषताएँ किसी के व्यवहार के शारीरिक या भौतिक पक्षों में सम्मिलित होती हैं।

(2) संज्ञानात्मक कारक (बौद्धिक या विचार)–ये क्रियाकलाप कारण पूछने, समस्याओं का समाधान करने, नए व्यवहार को समझने और एक-दूसरे से संप्रेषण करने में सहायक हैं। ये उदाहरण मानव के व्यवहार के विचारणीय पक्ष हैं।

(3) भावनात्मक कारक–गुस्सा, डर और प्रेम आदि भाव महसूस करने वाली स्थितियाँ भावनात्मक व्यवहार के प्रकार हैं।

(4) सामाजिक और वातावरणीय कार. क–ये हमारे व्यवहार को बनाते हैं। जैसे कि हम कैसे समाज में रहते हैं, हमारे परिवार का माहौल कैसा है, हम पर कौन-कौन से बाहरी प्रभाव पड़ते हैं क्योंकि मानव सामाजिक पशु है और ये कारक हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उपरोक्त चारों क्षेत्र एक-दूसरे पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए–समाज में भौतिक रूप से व्यवहार करते हुए हम एक ही समय पर अनेक कार्य भी करते हैं और सोचते भी हैं।

मनोविज्ञान की अन्तर्विषयी प्रकृति और कुछ प्रमुख शाखाओं को निम्नलिखित वृतचार्ट से दर्शाया जा सकता है :

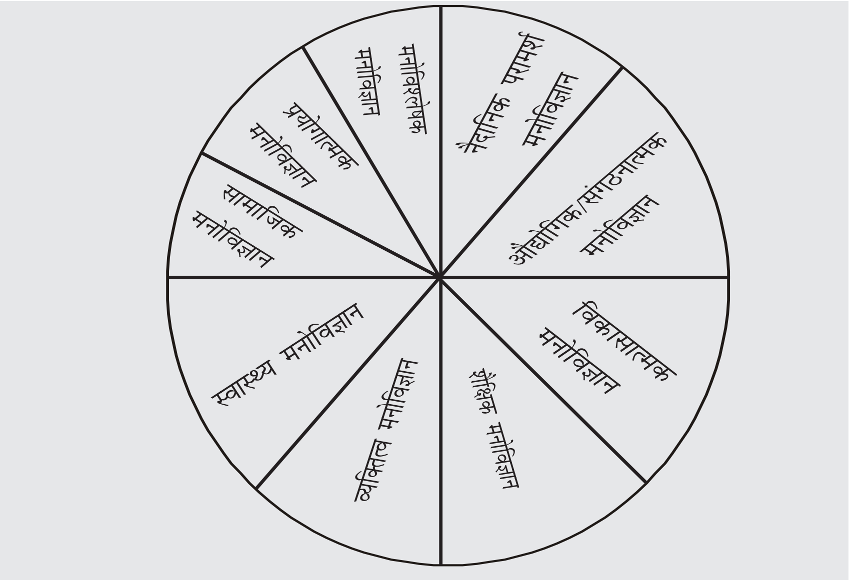

शैक्षिक मनोविज्ञान

यह किए गए अध्ययन को समझने और बुद्धि को जीवन की वास्तविक व्यवहार में लाने आदि पर केन्द्रित है। यह जीवन भर व्यक्तिगत प्रगति और व्यवहारात्मक परिवर्तन पर केन्द्रित रहता है। शैक्षिक मनोविज्ञान का उद्देश्य प्रक्रिया और शिक्षा के उत्पादों को बेहतर बनाना है।

चाहे आप मनोवैज्ञानिक हों, परामर्शदाता हों या शैक्षिणिक और व्यवसायिक मार्गदर्शन सलाहकार आदि के तौर पर कार्य करते हों आप अपने प्रयत्नों हेतु आय की माँग कर सकते हैं। मनोविज्ञान के चार महत्वपूर्ण उद्देश्य मनोवैज्ञानिक पूरा करते हैं–

(1) अपने लिए व्यवहार की मूलभूत जानकारी को प्राप्त करना : परामर्शदाता/विशेष अध्यापक/मनोवैज्ञानिक/शैक्षणिक और व्यवसायिक मार्गदर्शन सलाहकार के कार्य को जानना उत्सुकतापूर्ण है। लोगों को क्या प्रोत्साहित करता है?

- दृष्टिकोण कैसे बनते हैं?
- आयु बढ़ने के साथ-साथ लोग किस तरह बदलते हैं?
- व्यक्तित्व का निर्माण कैसे होता है?

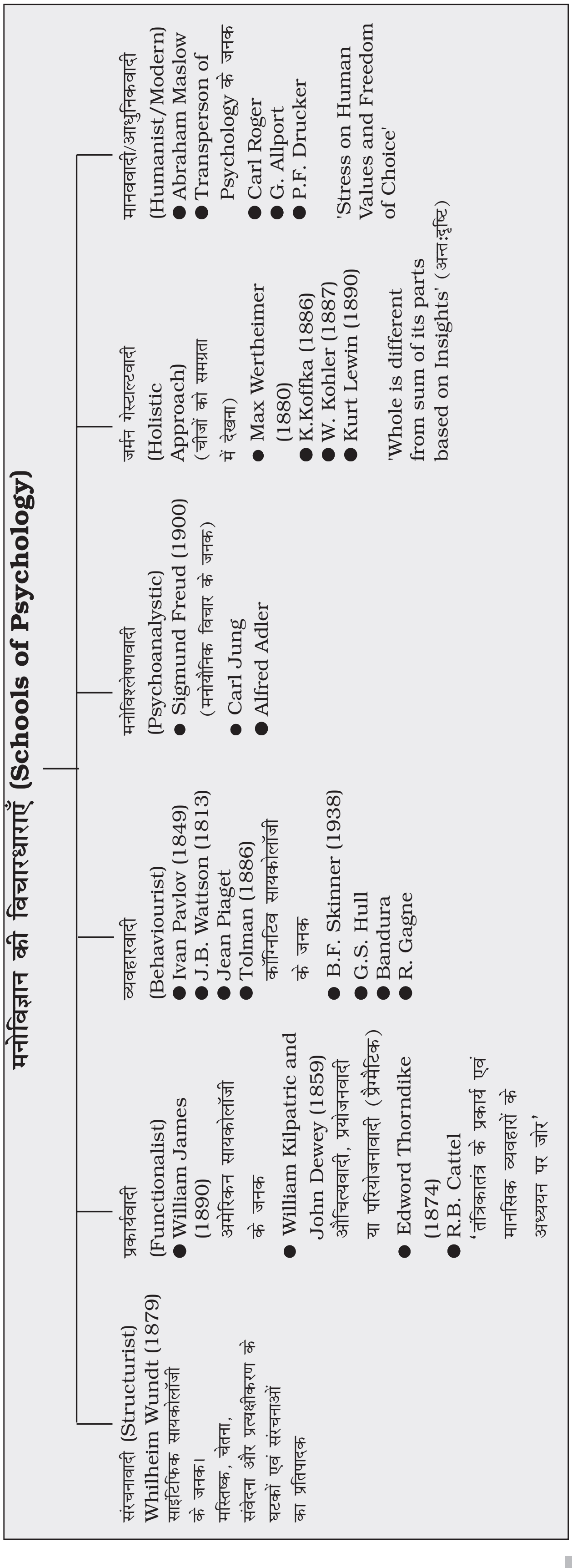

- वे हमेशा पहले क्या और कैसे पूछते हैं न कि क्यों। वे महत्वपूर्ण संबंधों और व्यवहार के कारणों को पता लगाते हैं।

(2) विशेष परिस्थितियों में मूलभूत जानकारी का अनुप्रयोग करना : उदाहरण स्वरूप, वास्तुकार अब भवन का निर्माण लोगों के व्यवहार को ध्यान में रख कर करते हैं न कि आकर्षण और लागत के अनुसार। अध्ययन की प्रभावी तकनीकों के विकास में अध्ययन के नियमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। विकासात्मक मनोविज्ञान में अनुसंधान बच्चों की परवरिश को बेहतर बनाने में सहायक है।

(3) बच्चों में मानसिक और भावनात्मक समस्याओं हेतु मूलभूत जानकारी प्रदान करना : जीवन में कई बार बच्चों को मानसिक या भावनात्मक समस्याओं से गुजरना पड़ता है। अधिकतर बच्चों की समस्या चिकित्सक या मार्गदर्शक या विशेष शिक्षकों द्वारा हल की जा सकती है। इस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि मानसिक और भावनात्मक रूप से टूटने से बचने के लिए मनोविज्ञान 'पूर्व चेतावनी प्रणाली' प्रदान कर सकता है।

उदाहरणस्वरूप–विद्यालय में विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं को देखते हुए विशेष शिक्षक उनकी मदद करते हैं और विशेष सहायता देते हैं।

(4) सामाजिक समस्याओं के लिए मूलभूत जानकारी का प्रयोग करना : उन मनोवैज्ञानिक कारकों पर काफी अनुसंधान किए गए हैं जो बच्चों में क्रोध और हिंसा या डराने व धमकाने की प्रवृत्ति को प्रभावित करते हैं।

विद्यालय के परामर्शदाता बच्चों के परिवार को परामर्श देकर रचनात्मक भूमिका निभाते हैं।

शैक्षिक मनोविज्ञान का अध्ययन करने का मुख्य कारण व्यवहार के त्रुटिपूर्ण प्रचलित कारणों को सुधारना है। उदाहरण के लिए–एक प्रचलित मत है कि ''विशेष जरूरतों वाले बच्चे लाभकारी नहीं होते।'' विशेष विद्यालयों और स्वतंत्र संगठन का सफल चल पाना अनसुनी कहानियों को व्यक्त करता है।

मनोविज्ञान के सिद्धांत

मनोविज्ञान पढ़ने की आवश्यकता क्यों है? हम कभी-कभी लोगों को कहते देखते हैं कि यह केवल सिद्धांतों का समूह मात्र है। मनोविज्ञान के कई सिद्धांत हैं। यदि कोई सिद्धांत तय नहीं होंगे, तो व्यवहार का अध्ययन करने में बहुत कम प्रगति हो पाएगी।

आधुनिक मनोविज्ञान की मुख्य विचारधाराएँ व उपागम–

(1) बाहर से व्यवहार का अध्ययन करना (प्रकट व्यवहार)

इस दृष्टिकोण को **व्यवहारवाद** कहा जाता है। इस कार्य को सबसे उत्कृष्ट ढंग से बी.एफ. स्किनर ने दर्शाया है। व्यवहारवाद व्यवहार को बनाने में पर्यावरण की भूमिका पर बल डालता है।

(2) अंदर से व्यवहार का अध्ययन करना (अप्रकट व्यवहार)

मनोवैज्ञानिक इसकी गैर मापन योग्य व मापन योग्य दोनों तरीकों

से जाँच करते हैं। यह आमतौर पर **संज्ञानात्मक** मनोविज्ञान की दृष्टि है। इस विचारधारा के मुखिया जीन प्याजे हैं, जिन्होंने बच्चों में सोचने की शक्ति के विकास पर अध्ययन किया है।

(3) व्यवहार के भागों का अध्ययन करना

यह भौतिक मनोवैज्ञानिकों और कुछ प्रज्ञ सिद्धांतवादियों का तरीका है। वे **अनुभवों** को सरल भागों में विश्लेषित करते हैं और फिर प्रत्येक भाग का अध्ययन करते हैं।

(4) संपूर्ण व्यवहार का अध्ययन

यह संपूर्ण दृष्टिकोण समष्टि के सिद्धांत से समझा जा सकता है।

यही तो **गेस्टाल्ट** की अवधारणा है। उदाहरण के लिए, आप किसी कार के इंजन के कार्य को केवल कैब्युरटर, स्पार्क प्लग्स या पिस्टन की क्रिया को देखकर समझ सकते। केवल इन भागों के साथ में कार्य करने की प्रक्रिया से ही आप समझ सकते हैं कि गाड़ी का इंजन कैसे चलता है।

समष्टि दृष्टिकोण का विकास करना मानवतावादी मनोविज्ञान है। जो किसी की आत्मिक समझ, सृजनात्मकता और क्षमता के विकास पर बल देता है।

मानवतावादी मनोवैज्ञानिक 'मुक्त होने' और गैर-मौखिक संप्रेषण के विभिन्न रूपों के लिए अनुभव की संपूर्णता तक पहुँचने हेतु तर्क करते हैं।

(5) अवलोकन किए गए व्यवहार की गहराई तक अध्ययन

सामान्य स्थिति में, इसे **मनोविश्लेषण** का सिद्धांत कहते हैं। मनोविश्लेषक किसी के मस्तिष्क में पलने वाले उद्देश्य तथा बल के साथ व्यवहार करते हैं। ये वे विचार हैं जो किसी के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए कभी-कभी किसी मित्र को चोट पहुँचाने की भावना केवल इसीलिए उत्पन्न होती है कि क्योंकि कोई मित्र गृहकार्य की कॉपी अपने घर ले गया था तो उसकी वजह से कक्षा में सजा मिली परन्तु वास्तव में ऐसा कर्म नहीं किया। ऐसा देखा गया है कि कोई व्यक्ति ऐसा अपनी प्रबल आवश्यकताओं के कारण सोचता है। ये बाल्यावस्था के अनुभव हैं जो आपको कार्य करने हेतु निर्देशित करते हैं। इस विचारधारा के जनक सिग्मण्ड फ्रायड और अन्य मनोविश्लेषक जैसे अन्ना फ्रायड, कार्ल जुंग, कैरन हॉर्नी, एलफर्ड एल्डर हैं।

अब हमें समझ आ चुका है कि मनोविज्ञान क्या है और किस भाग पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

व्यक्ति विशेष व संबंधित घटना का अध्ययन

शुभ लक्ष्मी तीन वर्ष की एक फुर्तीली बच्ची थी। वह स्वयं व अपनी बड़ी बहन धन लक्ष्मी के साथ खेलती थी, जो कि पाँच वर्ष की थी पर पिछले दो महीनों से उसके माता-पिता व पड़ोसी शुभ लक्ष्मी के व्यवहार में कुछ बदलाव देखने लगे। वह छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा होने लगती। और उसे सोने में भी परेशानी होने लगी। उसके माता-पिता को लगता था कि ऐसा उसकी नानी जी के आकस्मिक निधन के कारण हो रहा है, जो उनके बहुत करीब थीं। उन्होंने बताया कि जबसे मेरी माँ का निधन हुआ है, तब से शुभ लक्ष्मी ऐसा व्यवहार कर रही है। धन लक्ष्मी की बालवाड़ी अध्यापिका की इस स्थिति पर अलग टिप्पणी थी। उन्होंने बताया कि ऐसा होना साधारण है कि, जब किसी बच्चे का बड़ा भाई या बहन विद्यालय जाना शुरू कर देता है। वे कहने लगीं कि आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि शुभ लक्ष्मी कभी धनलक्ष्मी के बिना नहीं रहती थी।

शुभ लक्ष्मी को उसके माता-पिता बालमनोवैज्ञानिक/परामर्शदाता के पास ले गए, यह जानने के लिए कि :

- उसके व्यवहार में क्यों बदलाव आया?
- किन कारकों के कारण उसके व्यवहार में बदलाव आ गया?
- उसने किन नई चीजों को सीखा?
- वह क्यों हम पर निर्भर नहीं थी?

जिससे आगे प्रश्न उठने लगे–

- व्यवहार क्या है? बाल मनोविज्ञान क्या है?
- कौन से कारक विकास को प्रभावित करते हैं?
- अध्ययन क्या है? स्मरणशक्ति की क्या भूमिका है? आदि।

मनोविज्ञान का आरंभ कहाँ से होता है?

उल्लेखनीय है कि जब हमें **उद्दीपन** प्राप्त होता है तो हम **अनुक्रिया** देते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम किसी मित्र से सड़क पर मिल जाते हैं (उद्दीपन) तो हम उससे मिलने के लिए रुकते हैं और उससे बात करते हैं (प्रतिक्रिया)। जब हमारी आँख में कुछ चला जाता है (उद्दीपन) तब पानी आने लगाता है और जब हमारी आँख में कुछ चुभ जाता है तो हम उसे पानी से धोने लगते हैं (प्रतिक्रिया)। जब गलती से हम किसी गरम प्लेट को छू लेते हैं (उद्दीपन) तो हम अपना हाथ वहाँ से हटा लेते हैं (अनुक्रिया)

तो उद्दीपन और प्रतिक्रिया की प्रक्रिया क्या है? यह हमारे जीवन में मनोविज्ञान की महत्ता को किस तरह बताती है?

तो इस प्रश्न का उत्तर यह है कि जब भी कोई व्यक्ति किसी स्थिति में होता है तो वह बहुत सी अनुक्रियाएँ दे सकता है, जो कि इस बात पर निर्भर करती हैं कि उसने अपने जीवन में क्या सीखा है, क्या अनुभव किया है, उसी के आधार पर वह अनुक्रिया देता है और ये सभी कारक इन कारकों पर निर्भर करते हैं जैसे भूलने की प्रवृत्ति, सूचनाओं का नष्ट होना, हस्तक्षेप आदि। अत: मनोविज्ञान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तो इसे समझना चाहिए और ताकि इस तरह के परेशान करने वाले प्रभावों को कम किया जा सके जो कि किसी व्यक्ति या समाज के क्रियाकलापों में बाधा डालते हैं।

तब क्या होता है जब हम उद्दीपन का सामना करते हैं?

उत्तर यह है कि सबसे पहले हम अपनी इंद्रियों में बदलाव देखते हैं और फिर हम अपनी स्मरणशक्ति या पिछले अनुभवों के आधार पर चीजों को समझते हैं और फिर अपने मस्तिष्क में से उस स्थिति के लिए सबसे बेहतर अनुक्रिया को चुनते हैं।

उदाहरण के लिए :

हम किसी अजनबी को स्वयं को घूरते हुए देखते हैं तो हममें क्या बदलाव दिखाई देने लगते हैं?

सबसे पहले हमारी इंद्रियों में बदलाव आएगा फिर हम समझेंगे कि ओह! कोई मेरी तरफ देख रहा है, फिर हम पहचानने का प्रयास करेंगे कि यह कौन है? वह क्यों मुझे देख रहा है? क्या मैं उसे जानता हूँ या वह मुझे जानता है? भूतकाल में मिले कई लोगों से मिलें तरह-तरह के अनुभवों के अनुसार हम इसका उत्तर खोजने का प्रयास करेंगे और हमें अनुभव के आधार पर इसका उत्तर मिल जाएगा। (कि, पिताजी ने बताया था कि अजनबियों से बात करना ठीक नहीं है) हम स्थान के अनुसार अनुक्रिया देना सीखते हैं और मस्तिष्क के आधार पर हम पहचानने की कोशिश करेंगे कि क्या यह वह व्यक्ति है जिससे मैं अपने चचेरे भाई के विवाह में एक बार मिला था, यदि हाँ तो आप उसे देखकर मुस्करा देंगे और उससे बात करेंगे और यदि आप उसे याद नहीं कर पाते और वह व्यक्ति अजनबी है तो आप उस स्थान से दूर चले जाएँगे और इस पर सोचना बंद कर देंगे। क्योंकि हम अन्य बहुत से उद्दीपनों से घिरे होते हैं।

मनोवैज्ञानिक व्यवहार के प्रमुख चरण

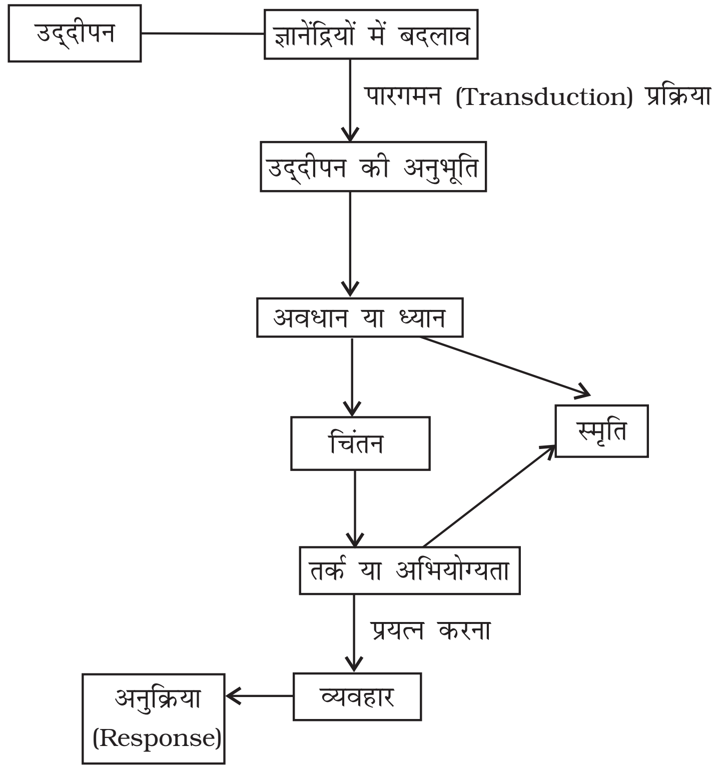

विषय वस्तु (Subuject Matler)

उद्दीपन–वह वस्तु या घटना जिससे हमारे किसी अंग या न्यूरॉन्स में विशिष्ट व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाएँ होने लगती हैं।

पारगमन (Transduction)–यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा न्यूरॉन्स द्वारा ग्रहीता की उद्दीपन (विद्युत क्षमता) ऊर्जा में परिवर्तित करती है।

यह महसूस की गई संवेदना को तंत्रिका संदेश में अनुवादित करने की प्रक्रिया है जिसे मस्तिष्क समझ सके। यह (Inductive-Deductive) का मिश्रित रूप है। पारगमन पंचज्ञानेंद्रियों द्वारा होता है।

अनुभूति–यह संवेदनात्मक उद्दीपन को पहचानने और समझने की प्रक्रिया है। उद्दीपन की व्याख्या की प्रक्रिया को अनुभूति कहा जाता है।

- अनुभूति वह प्रक्रिया है जिसमें हम अपने पर्यावरण से संवेदनात्मक सूचना प्राप्त करते हैं और उस सूचना को अपने पर्यावरण से व्यवहार करने में प्रयोग करते हैं।
- अनुभूति से हम संवेदनात्मक सूचना प्राप्त कर पाते हैं और उससे कुछ अर्थपूर्ण बना पाते हैं।
- संवेदनाएँ मस्तिष्क से संबंधित भाग में प्रेषित होती हैं। फिर मस्तिष्क इन संवेदनाओं को समझता है। मस्तिष्क के संदेश के बाद ही हम उद्दीपन को समझ पाते हैं।

अत: अपने आसपास के वातावरण को समझने के लिए सबसे पहले जागरुकता आवश्यक है, फिर संवेदना और फिर अंत में मस्तिष्क द्वारा की गई व्याख्या।

ध्यान–अन्य समझने योग्य सूचनाओं की उपेक्षा करते हुए यह व्यक्तिपरक या वस्तुनिष्ठ सूचना कुछ चयनित अलग पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करने वाली व्यवहारात्मक और संज्ञानात्मक प्रक्रिया है।

- ध्यान का अर्थ सीमित प्रसंस्करण स्त्रोतों के आवंटन से भी लिया जा सकता है।
- ध्यान जागरुकता की वह स्थिति है जिसमें इंद्रियाँ केवल पर्यावरण के पहलुओं पर केन्द्रित हैं। इसीलिए, तंत्रिका तंत्र प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार रहता है। क्योंकि मनुष्य सीमित रूप से जागरुक होने की क्षमता रखता है, वे अन्यों से ध्यान हटा कर कुछ निश्चित चीजों पर ध्यान केन्द्रित करता है।

स्मृति–वर्तमान काल में इस सूचना का प्रयोग करते हुए हम अपने पुराने अनुभवों से इसका प्रयोग करते हैं (स्टर्लिंग, 1999)।

- स्मृति उन संरचनाओं और प्रक्रियाओं को कहा जाता है जो मस्तिष्क में संचित व पड़ी हुई सूचनाओं का भंडार है।

चिंतन–यह ज्ञान और सूचनाओं की वह मानक प्रक्रिया है, जिसका प्रयोग योजनाएँ बनाने, व्याख्या करने तथा विश्व में आदर्श स्थापित करने के लिए किया जाता है और सामान्य रूप से विश्व से संबंधित बातों पर भावी अनुमान लगाने के लिए किया जाता है।

- चिंतन उद्दीपन और प्रतिक्रिया के संबंध को मजबूत करने हेतु मानव द्वारा कारण जानने का भी क्रियाकलाप है।
- चिंतन ज्ञान सहित विचारों का तार्किक कार्य है जो कि मस्तिष्क में किसी नवीन सूचना के आ जाने तक संचित रहता है।
- विचार को किसी चीज को स्मरण रखने और प्रश्न करने तथा प्रयोजन से संबंध जोड़ने के रूप में विवेचित किया जा सकता है।
- चिंतन मानवीय तर्कणा का मूल आधार है। बिना इसके मनोविज्ञान की विकासशील की रणनीति कार्य नहीं करती है। इसीलिए चिंतन को मनोविज्ञान के मूल की संज्ञा दी जाती है।

तर्कशास्त्र व शक्ति–यह लोगों द्वारा कारण-परिणाम जानने का अध्ययन है।

यह निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया है जिसमें यह देखा जाता है कि लोग कैसे समस्याओं का समाधान करते हैं और निर्णय लेते हैं।

व्यवहार–यह किसी व्यक्ति, जीव द्वारा किए गए कार्यों और उसके तौर-तरीकों के विभिन्न रूप हैं, जो वह किसी स्थिति को दर्शाता है।

- मानवीय व्यवहार की अवधारणा किसी व्यक्ति के कार्य या आचरण का वर्णन करने के लिए प्रयोग की जाती है।

प्रतिक्रिया–किसी भी घटना, स्थिति या व्यवहार के संबंध में की गई **अनुक्रिया** प्रतिक्रिया कहलाती है। यह किसी भी प्रकार का व्यवहार कहा जा सकता है जो उद्दीपन के परिणामस्वरूप उभर कर आता है।

ये कारक मानव की प्रगति में महत्वपूर्ण हैं और व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि सभी प्रक्रियाएँ बाधाओं से मुक्त होंगी तो मानव तनाव और समस्याओं से मुक्त हो जाएगा और यदि ऐसा न हो तो यह दुख की स्थिति में डाल देगा। ऐसे बहुत से कारक हैं जो उपर्युक्त प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करते हैं जैसे आवश्यकता, उद्दीपन की प्रकृति, भागीदारी, नवीनता और पुराने अनुभव। तो ये सभी कारक कम किए जा सकते हैं या इनके प्रभावों को कम किया जा सकता है ताकि कोई दुख से मुक्त हो सके और जीवन में आगे बढ़ सके।

ऐसी अवधारणाओं की शैक्षिक व्यवस्था में क्या महत्व है?

मनोविज्ञान शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है। किसी भी शिक्षक के लिए अपने विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता को ध्यान में रखते हुए पढ़ाना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

बिल्कुल आसान भाषा में कहा जाए कि विद्यार्थियों के अध्ययन और अधिगम उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है। जैसे शैक्षिक मानसिकता का विकास हुआ, अनुभूति, सचेतता से विचार करना, स्मृति और संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ हैं जो प्रत्येक मनुष्य में होती हैं जिससे उसका व्यवहार, चेतना और व्यक्तित्व बनता है और जो उसे दूसरों से अलग बनाता है।

मनोविज्ञान की प्रमुख शब्दावलियाँ

- **संज्ञान**–विचार, अनुभव और इंद्रियों से ज्ञान और समझ का विकास करने की मानसिक प्रक्रिया।
- **स्कीमा**–मनोविज्ञान में रूपरेखा, विचार या व्यवहार की योजना का वर्णनकरती है, जो सूचनाओं के वर्गीकरण को संगठित करती है और उनमें संबंध स्थापित करती है। लोग रूपरेखा का प्रयोग वर्तमान ज्ञान को संगठित करने और भावी समझ हेतु ढाँचा तैयार करने के लिए करते हैं।
- **दृष्टिकोण या मनोवृत्ति**–किसी गहरे विश्वास या भावों के कारण किसी निश्चित ढंग से प्रतिक्रिया देने की सीखी गई प्रवृत्ति।
- **शारीरिक भाषा व हाव-भाव**–ये संप्रेषण के वे निश्चित तरीके है जो शारीरिक हाव-भाव जैसे भौंहे उभारना, आँखों के हाव-भाव से व्यक्त किए जाते हैं।
- **सामूहिक व्यवहार**–यह वह तरीका है जिसके द्वारा कोई समूह का सोचना, महसूस करना या कोई तर्कहीन बल के आधार पर काम करता है। जैसे भीड़, पंथ, समुदाय।
- **अवधारणा**–यह एक मानसिक वर्गीकरण है जो किसी समान क्रियाओं या समान दिखने वाली वस्तुओं को दर्शाता है।
- **सचेतन**–महसूस या अनुभूति कर पाना, मस्तिष्क का वह भाग जो उनसे व्यवहार करता है जिसके बारे में हम सचेत होते हैं।
- **चेतना**–वह परिमाण जिससे कोई अपने व आसपास के पर्यावरण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- **अचेतन**–मानव मस्तिष्क का एक बड़ा भाग जो उद्देश्यों, आवश्यकताओं और उन भावों से मिल कर बनता है जिससे कोई व्यक्ति सचेत नहीं होता है।
- **अन्तर्नोद या चालक (ड्राइव)**–वह बल जो आवश्यकता से उत्पन्न होता है और किसी भी जीव की आवश्यकता को पूरा करने की ओर ले जाता है।
- **साधारणीकरण**–किसी निश्चित धारणा के अनुसार जब दो या इससे अधिक उद्दीपन समान हों, उन सभी के प्रति प्रतिक्रिया भी समान होगी।
- **प्रतिभाशाली**–जिसका आईक्यू 150 से अधिक हो।
- **परिकल्पना**–कुछ मान लिया गया क्योंकि वह सत्य तार्किक व्याख्या जैसा लग रहा हो।

- **स्मृति सहायक डिवाइस (Mnemonic)**–संकेत जैसे ट्रिक्स, जिंगल, कविता या किसी भी प्रकार का संपर्क जों कुछ याद रखने में सहायक हो।
- **रूपिम (Morpheme)**–भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसका अर्थ हो।
- **स्वनिम (Phoneme)**–ध्वनि की सबसे छोटी इकाई जिसे भाषण की पृथक ध्वनि के रूप में पहचाना जाता है।
- **मानक**–समाज में व्यवहार के वांछित स्तर।
- **वस्तुनिष्ठ परीक्षण**–व्यक्तिगत के मानदंड की विचारधारा जो किसी व्यक्तित्व की मूलभूत विशेषताएँ, दृष्टिकोण, रुचियाँ, अभिलाषाओं जिसे आमतौर पर साक्षात्मक या स्वयं-सूची के रूप में व्यक्त किया गया है।
- **मित्र मण्डली**–समान आयु का व्यक्ति या कोई अन्य।
- **पक्षपात**–वह दृष्टिकोण जो किसी तर्कशील प्रमाण के बिना सहायक हो, जो समय के साथ बना रहे और यह किसी व्यक्ति या समूह के प्रति भावनात्मक अनुभूति हो।
- **प्रक्षेपी परीक्षण**–व्यक्तित्व को जाँचने के लिए सतह के नीचे और व्यक्ति के अंदर की व्यापक विशेषताओं को बाहर निकालना।
- **पुनःस्मरण**–स्मृति का वह मानदंड जिसमें, कुछ संकेतों के द्वारा कोई व्यक्ति पहले सीखी प्रतिक्रिया के अनुसार व्यवहार करता है।
- **अभिज्ञान (Recognition)**–स्मृति का वह मानदंड जिसमें कोई व्यक्ति पहले दर्शायी गई वस्तुओं को पहचान पाता है।
- **पुनः अधिगम**–स्मृति का वह मानदंड जिसमें कोई व्यक्ति कार्य पर विशेषज्ञता प्राप्त करने और कुछ समय निकल जाने के बाद (आमतौर पर पहले से अधिक शीघ्र) दूसरी बार कार्य सीखता है।
- **विसंबंधन (Alienation)**–किसी समाज या समूह का अंग न होने की भावना।
- **अभिक्षमता (Aptitude)**–ऐसी क्षमताओं का संयोग जो व्यक्ति की शिक्षण द्वारा कुछ विशिष्ट कौशलों को अर्जित करने की समर्थता का सूचक है।
- **विश्वसनीयता**–यदि कोई व्यक्ति दो बार परीक्षा दे रहा है तो उसे दोनों बार समान अंक प्राप्त करने चाहिए। यदि स्थिति ऐसी न हो तो परीक्षा विश्वसनीय नहीं कही जा सकती।
- **आत्म-सिद्धि (Self Actualization) की अवस्था**–अपनी पूर्ण शक्ति का अहसास होना।
- **आत्म-अवधारणा**–एक समग्र चित्र जिसमें कोई अपने व्यक्तित्व को स्वयं देखता है।
- **व्यवहार साकार करना (Shaping)**–व्यवहार को सदृढ़ करने की प्रक्रिया जो कि इच्छित प्रतिक्रिया के जैसी हो और केवल उसके जैसी प्रतिक्रियाओं को सदृढ़ करना है जब तक कि इच्छित प्रतिक्रिया सीख नहीं ली जाती।
- **सामाजिक मानक**–संविधान, कर्तव्य, मानक और रीति-रिवाजों से बने व्यवहार के निर्धारित मानक हैं जो कि एक निश्चित समाज का निर्माण करते हैं।
- **प्रतीक**–जो कुछ दर्शाता हो जैसे अधिकतर शब्द चिह्न हैं, जो अवधारणाओं को दर्शाते हैं।
- **निष्कर्षानांतरण**–अध्ययन करने की वह प्रक्रिया जिसमें कोई उद्दीपन को पहचानता व उसका विश्लेषण करता है, इसके बाद अपना दृष्टिकोण स्थापित करता है और भावनाएँ संचित करता है और फिर समान स्थितियों में ऐसे व्यवहार का स्थानांतरण करता है।
- शैक्षिक समाजशास्त्र का संबंध शिक्षा मनोविज्ञान और समाजशास्त्र दोनों से है।
- अतः शिक्षा के समाजशास्त्रीय सरोकारों का संबंध सामुदा. यिकता, सामाजिकता और समाजीकरण से लेकर संस्कृति-स. भ्यता से प्रतिमानों तक है।
- **जॉर्ज पेन** को शैक्षिक समाजशास्त्र का पिता माना जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान का जनक होने का श्रेय ई.एल. थॉर्नडाइक को है। जबकि वास्तविक जनक एडवर्ड थॉर्नडाइक है।
- संवेग, बुद्धि-विवेक, अधिगम, व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता, बाल विकास जैसे महत्वपूर्ण विषय शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत आते हैं।
- **जॉन पेस्टॉलॉजी** (Johann Pestalozzi) जिनका पूरा नाम जॉन हेनरिक पेस्टालॉजी (1746-1827) था वे शैक्षिक मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने शिक्षण विधियों को विद्यार्थी स्वरूप बनाने पर जोर दिया।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. ''मनुष्य जन्म से स्वतंत्र होता है लेकिन हर जगह जंजीर से बंधा रहता है।'' यह कथन किसका है?

(1) अब्राहम मैस्लो (2) जीन जैक्स रूसो

(3) जॉन डीवी (4) डब्ल्यू.आई.आई. किलपैट्रिक

2. ''मुझे एक दर्जन स्वस्थ बच्चे दे दो, मैं उन्हें डॉक्टर, न्यायाधीश, भिखारी और यहां तक कि चोर भी बना सकता हूँ।'', किसकी टिप्पणी है?

(1) जे.बी. वाटसन (2) हल

(3) जंग (4) गुथरी

3. शिक्षा की द्विध्रुवीय प्रक्रिया का विचार .... द्वारा विकसित है।

(1) सर जॉन डीवी (2) सर जॉन एडम्स

(3) सर आइजक न्यूटन (4) सर रिचार्ड ब्रेन्सन

4. शैक्षिक समाजशास्त्र का प्रणेता निम्नलिखित में से कौन है?

(1) जॉर्ज पेन (2) जॉन एडम्स

(3) जॉन डीवी (4) विलिहेम वुण्ट

5. शिक्षा मनोविज्ञान का जनक किसे कहा जाता है?

(1) जे.बी. वाटसन

(2) ई.एल. थॉर्नडाइक

(3) बी.एफ. स्कीनर

(4) जॉन एडम्स

6. शिक्षा की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया .... द्वारा चलाई गई।

(1) चार्लोट मैसन (2) फ्रेडरिक फ्रोबेल

(3) जॉन डीवी (4) मरिया मोंटेसरी

7. किस दार्शनिक का विचार है कि, शिक्षा मानव विकास के सिद्धांतों पर आधारित होनी चाहिए?

(1) डीवी (2) वाटसन

(3) रूसो (4) थॉर्नडाइक

8. 19वीं शताब्दी के अंत में किस दार्शनिक ने सीखने के नियम जानवरों के साथ अपने प्रयोगों के परिणामस्वरूप तैयार किए?

(1) गिलफोर्ड (2) वाटसन

(3) एडवर्ड थॉर्नडाइक (4) जॉन डीवी

9. शैक्षिक मनोविज्ञान शैक्षिक विकास का एक व्यवस्थित अध्ययन है। यह कथन किसका है?

(1) बी.एफ. स्किनर (2) सी.वी. गुड

(3) जे.एम. स्टीफन (4) सी.एच. जुड

10. निम्न में से कौन-सा अधिगम का साहचर्यवाद का सिद्धांत नहीं है?

(1) अनुकूलित अनुबद्धता का सिद्धांत

(2) गेस्टाल्ट का सिद्धांत

(3) उद्दीपन-अनुक्रिया का सिद्धांत

(4) क्रियाप्रसूत अनुबन्धन का सिद्धांत

11. गेस्टाल्ट सिद्धात की अभिधारणा है कि तत्वों को स्वरूप के अनुसार समूह में रखना चाहिए। यह .... का सिद्धांत है।

(1) सामीप्य (2) समानता

(3) सादगी (4) समापन

12. वैज्ञानिक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है :

(1) विल्हेम वुण्ट

(2) विलियम जोंस

(3) विलियम जेम्स

(4) सिग्मण्ड फ्रायड

13. तंत्रिकातंत्र के प्रकार्य और मानसिक व्यवहारों के अध्ययन पर जोर दिया गया था:

(1) संरचनावादी में

(2) प्रकार्यवाद में

(3) व्यवहारवाद में

(4) मनोविश्लेषणवाद में

14. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान 'स्कूल' के जनक माने जाते हैं:

(1) जीन प्याजे (2) जे.बी. वाटसन

(3) बर्दाइमर (4) अब्राहम मैस्लो

15. मानसिक स्तर पर सूचना एवं विचार का संगठन मनोविज्ञान में .... कहलाता है।

(1) अनुभूति (2) स्किमा

(3) स्मृति (4) बुद्धि

16. आत्मसिद्धि (Self-Actualization) का तात्पर्य है:

(1) आत्म शक्ति की अनुभूति

(2) कार्यसिद्धि अवस्था

(3) आत्म सम्मान

(4) स्वसुरक्षा

17. मनोयौनिक और मनोविश्लेषणवाद के जनक हैं–

(1) सिग्मण्ड फ्रायड (2) अब्राहम मैस्लो

(3) जे.बी. वाटसन (4) लेव वाइगोत्स्की

18. वह विषय वस्तु या घटना जो व्यवहारिक प्रतिक्रिया का जनक होती है, कहलाती है।
(1) पारगमन (2) उद्दीपन
(3) व्यवहार (4) अनुभव

19. शिक्षा को सर्वांगीण विकास का साधन मानते थे–
(1) महात्मा गांधी (2) स्वामी विवेकानंद
(3) अब्राहम मैस्लो (4) जॉन डीवी

20. ''स्वास्थ्य ही जीवन है'' सूत्रवाक्य किसने कहा है?
(1) सुकरात (2) प्लेटो
(3) अरस्तू (4) मैकेनियस

21. ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है'' किसका कथन है?
(1) सुकरात (2) प्लेटो
(3) अरस्तु (4) कोल्मैन

22. व्यवहारवाद के पर्याय माने जाते हैं?
(1) औचित्यवाद (2) प्रयोजनवाद
(3) प्रकार्यवाद (4) उपरोक्त सभी

23. 'ज्ञान के बजाय कर्म' पर जोर देने वाला मनोवैज्ञानिक स्कूल है:
(1) अस्तित्ववाद
(2) व्यवहारवाद
(3) मनोविश्लेषणवाद
(4) आदर्शवाद

24. मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक द्वारा स्थापित की गई?
(1) विल्हेम वुण्ट (2) विलियम स्टर्न
(3) विलियम जेम्स (4) विलियम जोंस

25. मनोविज्ञान किसका अध्ययन माना जाता है?
(1) मन (Mind) का
(2) आत्मा (Soul) का
(3) हृदय (Heart) का
(4) अचेतन (Uncounsions) का

संक्षिप्त उत्तरमाला

1.	(2)	2.	(1)	3.	(2)	4.	(1)	5.	(2)
6.	(3)	7.	(3)	8.	(3)	9.	(3)	10.	(3)
11.	(2)	12.	(1)	13.	(2)	14.	(1)	15.	(2)
16.	(1)	17.	(1)	18.	(2)	19.	(1)	20.	(1)
21.	(3)	22.	(2)	23.	(2)	24.	(1)	25.	(1)

उत्तर व्याख्या सहित

1. (2) मनुष्य की जन्मजात स्वतंत्रता और जन्मोपरांत परतंत्रता का विचार रूसो ने व्यक्त किया है। रूसो ने अपने सामाजिक समझौते के सिद्धांत का आरंभ इसी पंक्ति से किया है। इस सिद्धांत के द्वारा समाज के उदय व उनके सदस्यों के मध्य संबंधों की व्याख्या की गई है।

2. (1) जे.बी. वाटसन व्यवहारवाद के प्रवर्तक थे। व्यवहारवादियों ने केवल महसूस करने योग्य तथा मापने योग्य व्यवहार अधिगम, अभिप्रेरणा एवं पुनर्बलन पर ध्यान केंद्रित किया।

3. (2) सर जॉन एडम्स ने अपनी पुस्तक 'इवोल्यूशन ऑफ एजुकेशन थ्योरी' में कहा है कि शिक्षा एक द्विध्रुवीय प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तित्व के विकास को संशोधित करने के लिए एक-दूसरे पर कार्य करता है। यह मानता है कि शिक्षा की प्रक्रिया में दो व्यक्ति शामिल हैं: एक शिक्षक है और दूसरा शिष्य है।

4. (1) शैक्षिक समाजशास्त्र का संबंध शिक्षा मनोविज्ञान और समाजशास्त्र दोनों से है।
अत: शिक्षा के समाजशास्त्रीय सरोकारों का संबंध सामुदायिकता, सामाजिकता और समाजीकरण से लेकर संस्कृति-सभ्यता के प्रतिमानों तक है। जॉर्ज पेन को शैक्षिक समाजशास्त्र का प्रणेता माना जाता है।

5. (2) शिक्षा मनोविज्ञान का जनक एडवर्ड थॉर्नडाइक है।
संवेग, बुद्धि, अधिगम, व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता, बालविकास जैसे महत्वपूर्ण विषय शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत आते हैं।

6. (3) शिक्षा की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया जॉन डीवी द्वारा मानी गई है। वह शिक्षा को विकास की प्रक्रिया मानते हैं। इस तरह, शिक्षा की प्रक्रिया में तीन ध्रुव होते हैं: (1) शिक्षक, (2) बच्चा, (3) समाज।

7. (3) रूसो प्रकृतिवादी थे। प्रकृतिवादी का दृष्टिकोण पूर्णत: भौतिक और यांत्रिक हैं। प्रकृतिवादी के अनुसार मानव विकास के नियम प्राकृतिक एवं बालक की स्वतंत्रता पर जोर देता है।

8. (3) थॉर्नडाइक ने ही सीखने के नियम जानवरों के साथ अपने प्रयोगों में बताया। इन्होंने संयोजनवाद सिद्धांत और सीखने की प्रयास एवं त्रुटि विधि का प्रतिपादन किया।

9. (3) स्टीफन के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा की वृद्धि एवं विकास का विधिवत अध्ययन है। वृद्धि शारीरिक और विकास शारीरिक-मानसिक दोनों तरह से संबंधित है।

10. (3) व्यावहारिक साहचर्य सिद्धांतों के अनुसार अधिगम प्रक्रिया विभिन्न उद्दीपनों एवं अनुक्रियाओं का परस्पर संबंध है। थॉर्नडाईक, वाटसन, पैवलव, स्किनर, मिल्लर, हल तथा गुथरी आदि इसके प्रमुख समर्थक हैं।

11. (2) गेस्टाल्टवादी विचार के अनुसार वस्तुओं में समानता होती है तथा विशेषताओं में वे एक दूसरे के समान होती है। वे एक समूह के रूप में प्रत्यक्षित होती है। इसमें आकार, रंग, बनावट (टेक्सचर) की समानताओं के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

12. (1) संरचनावादी (Structurist): Whilheim Wundt (1879) साइंटिफिक सायकोलॅजी के जनक हैं जो मस्तिष्क, चेतना, संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के घटकों एवं संरचनाओं का प्रतिपादक हैं।

13. (2) प्रकार्यवादी (Functionalist) William James (1890) अमेरिकन सायकोलॉजी के जनक हैं जो तंत्रिकातंत्र के प्रकार्य एवं मानसिक व्यवहारों के अध्ययन पर जोर देते हैं।

14. (1) संज्ञान वस्तुतः विचार, अनुभव और इन्द्रिय जनित ज्ञान-समझ की मानसिक प्रक्रिया है। इस मनोवैज्ञानिक शाखा के प्रणेता जीन प्याजे हैं।

15. (2) स्किमा-मनोविज्ञान में रूपरेखा, विचार या व्यवहार की योजना का वर्णन करती है, जो सूचनाओं के वर्गीकरण को संगठित करती है और उनमें संबंध स्थापित करती है।

16. (1) मनोविज्ञान 'मानववादी स्कूल के महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अब्राहम मैस्लो ने आवश्यकता सोपानक्रम सिद्धांत की उच्चतम अवस्था 'आत्मसिद्धि' को बताता है। यह स्वात्म शक्ति-सिद्धि की अवस्था है।

17. (1) सिग्मण्ड फ्रायड मनोवैज्ञानिक विचारधारा : मनोयौनिक एवं मनोविश्लेषणवाद के प्रणेता हैं। चेतन-अवचेतन-अचेतन और इड-इगो-सुपरइगो इस विचार के प्रमुख घटक हैं।

18. (2) उद्दीपन से विषय वस्तु को समझने की प्रक्रियान्तर्गत हमारे किसी अंग या न्यूरॉन्स में विशिष्ट व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाएं होने लगती है।

पारगमन (Transduction) : यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा न्यूरॉन्स द्वारा ग्रहीता की उद्दीपन (विद्युत क्षमता) ऊर्जा में परिवर्तित करती है।

19. (1) महात्मा गांधी शिक्षा को सर्वांगीण विकास का साधन मानते थे।

वे कहते थे–''शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के अन्तर्निहित शक्तियों के सर्वोत्तम प्रकटीकरण से है।''

20. (1) सुकरात, प्लेटो और अरस्तू युनानी विचारक थे। सुकरात ने ही यह विश्व प्रसिद्ध सूत्रवाक्य व विचार ''स्वास्थ्य ही जीवन है'' व्यक्त किया था। प्लेटो ने अपनी चर्चित पुस्तक 'रिपब्लिक' में राज्य-समाज के नियामक सिद्धांतों और दार्शनिक राजा के बारे में सारगर्भित विचार दिए हैं।

21. (3) 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।' यह विचार अरस्तू की ही युगांतकारी देन है।

22. (2) व्यवहारवाद पश्चिमी शैक्षिक दर्शन है जिसके प्रणेता जॉन डीवी हैं। व्यवहारवाद व्यवहार-कर्मगत व्यवहार पर बल देता है इसीलिए यह प्रकार्यवाद है।

23. (2) प्रैग्मेटिस्ट (व्यवहारवादी) ज्ञान-विज्ञान ने बजाय कर्म-व्यवहार को प्राथमिकता देते हैं। यह करके सीखने पर जोर देता है। इसीलिए अभिप्रेरणा एवं अभ्यास उसके प्रमुख चरण हैं।

24. (1) मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला जर्मनी के लिपजिंग शहर में विल्हेम वुण्ट द्वारा 18वीं सदी में स्थापित की गई है।

25. (1) मनोविज्ञान को प्रथमतः मन का विज्ञान (Science of Mind) कहा जाता है। मनोविज्ञान में मानव मन की अवस्थाओं एवं व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है।

□□□

2 प्राथमिक एवं प्रारंभिक स्कूली बच्चों का विकास (Primary & Elementary School Child Development)

शिशु और बच्चे

जन्म के समय बच्चा माँ के नियंत्रित और सुरक्षित गर्भ से निकल कर अविश्वसनीय पर्यावरण में प्रवेश करता है। हालाँकि नवजात शिशु इस बाहरी दुनिया में कई पूर्व निर्धारित अनुक्रियाओं के साथ जन्म लेता है। नवजात शिशु अपनी आँखों से धीरे-धीरे चलने वाली वस्तुओं को देखते हैं।

वे अनेक ध्वनियों को समझ पाते हैं और कई लयात्मक ध्वनियों को सुनकर अच्छा महसूस करते हैं। वे कड़वे और नमकीन स्वाद में अंतर महसूस कर पाते हैं। नवजात शिशु सुगंध व दुर्गंध, तापमान के तेजी से बढ़ने या घटने या छूने पर प्रति भी प्रतिक्रिया देते हैं। बाहरी दुनिया के प्रति उनकी प्रतिक्रियाएँ तेजी से बढ़ती हैं।

हम ऐसा समझते हैं कि बच्चे असहाय होते हैं। उन्हें स्वयं खिलाना चाहिए और सुरक्षित रखना चाहिए। परन्तु जन्म के 6 महीने तक वे स्वयं से बहुत कुछ सीखते हैं।

वृद्धि का अर्थ शारीरिक वृद्धि से है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं उनमें शरीर का विकास भी उसी अनुपात में बढ़ता है और माता से उनके संबंधों की पूर्णपीठिका तैयार होती है।

हरलो की (Harlow's) मंकी स्टडी

हैरी हारलो ने 1958 में बंदर के बच्चे और उसकी माँ के मध्य के प्रेम के संबंधों पर अपना प्रयोग किया था। इसी आलोक में विस्कोन्सिन विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिकों ने बाल्यावस्था में माँ के प्रेम पर अध्ययन किया। इसके अभाव में बंदरों के बच्चों के समूह में भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को देखा। हालाँकि यह जानवरों में देखा गया परन्तु यह इरीकोन के सिद्धान्तों से मेल खाता था जिसमें दोनों माँ (आमतौर पर सबसे पहले पालन करने वाली) का बच्चे के साथ संबंध पर जोर डालते हैं। ये मनोचिकित्सक मानते हैं कि भावनात्मक विकास पहले आरंभ होता है और यह किसी बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण होता है।

> विकासात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है जिसमें अंत: वैयक्तिक और अंतरवैयक्तिक परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है।
>
> विकासात्मक स्वरूप के अंतर्गत किसी निश्चित समय का अध्ययन उस समय की किसी व्यवहारात्मक समस्या का समाधान करने की इच्छा से बहुत प्रभावित होता है।

विकासात्मक मनोविज्ञान के मुख्य उद्देश्य

(क) किसी एक विकासात्मक काल से दूसरे काल तक विशेषताओं में होने वाले समान अंतरों को पहचानना जैसे रूप, व्यवहार, रुचि में परिवर्तन होना।

(ख) यह पहचानना कि ये परिवर्तन कब आते हैं?

(ग) यह पहचानना कि इसका कारण क्या है?

(घ) यह पहचानना ये कैसे व्यवहार को प्रभावित करते हैं?

(ङ) यह पहचानना कि क्या इनका अनुमान लगाया जा सकता है या नहीं?

(च) यह पहचानना कि क्या ये वैयक्तिक हैं या सार्वभौमिक?

विकासात्मक परिवर्तन–

इसका अर्थ प्रगतिशील ढंग से होने वाले ये परिवर्तन जो परिपक्वता और अनुभव के परिणामस्वरूप होते हैं।

उदाहरण स्वरूप–मानव स्थिर नहीं है। वह जन्म से मृत्यु तक व्यापक है। शारीरिक और मनोवैज्ञानिक क्षमताओं में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं। जैसा कि प्याजे ने व्याख्या की है, संरचनाएँ स्थिरता से कहीं आगे हैं वहीं बोवर ने इस बात पर ध्यान दिलाया है कि यह दक्षता विकास की चक्रीय प्रक्रिया है, जो कि लुप्त हो रही है और बाद में नजर आती है। यह सतत नहीं है क्योंकि यह निरंतर बढ़ रही है।

> जॉन लॉक के अनुसार जन्म के समय बालक का मस्तिष्क एक कोरी स्लेट (Tabulla Russa) के समान होता है। जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है। अर्थात् जन्म के बाद जिस प्रकार के पर्यावरण में वह रहता है उसका प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। लॉक ने पर्यावरण को वैयक्तिक भिन्नता का प्रमुख कारण माना है।

किशोर बच्चों का विकास कैसे होता है?

माँ के गर्भ में जो भी होता है वह बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण तरीकों से प्रभाव डालता है।

प्रसवपूर्व अवस्था में, विसंक्रमित डिंब बढ़ता है और विकसित होता है। भ्रूण बहुत छोटा होता है और तेजी से बच्चे का विकास होता है, जिसे माँ की गर्भनाल से पोषण प्राप्त करता है। जन्म के समय बच्चे का स्वास्थ्य माँ के गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य हेतु महत्वपूर्ण है। जन्म से पहले कुपोषण का शिकार होना भ्रूण के विकास को कम करता है। माँ का कोई विशेष रोग भ्रूण को नष्ट भी कर सकता है।

उदाहरणस्वरूप–यदि एक महिला को गर्भावस्था के तीसरे माह में खसरा हो जाए तो बच्चा नेत्रहीन, बहरा हो सकता है या ऐसा भी हो सकता है कि जन्म के समय उसका मस्तिष्क या हृदय काम न करता हो। आजकल चिकित्सक गर्भवती महिलाओं को बहुत सोच-समझ कर कोई औषधि देते हैं। इसके अतिरिक्त, वे गर्भवती महिला को सिगरेट व शराब व अन्य किसी दवाई का सेवन करने से मना करते हैं। गर्भावस्था के दौरान माँ के तनाव के प्रभाव को अब तक ज्यादा नहीं समझा गया जो कि बच्चे के आरंभिक भावनात्मक विकास को प्रभावित करता है। बच्चों का बहुत अधिक रोना माँ का गभार्वस्था के दौरान तनावपूर्ण रहने का संकेत होता है।

संस्थान विकास को कैसे प्रभावित करते हैं?

तब क्या होता है यदि कोई शिशु अपनी माँ से अलग हो जाता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए ब्रिटिश मनोचिकित्सक **जोन बॉलबाय** ने अनाथालयों में अनेक बच्चों पर अध्ययन किया है।

उन्होनें उन बच्चों में अवसाद को समान पाया। उन्होंने बताया कि इन बच्चों में दुख के वही लक्षण मिले जैसे किसी बड़े में तब मिलते हैं जब उनके किसी अपने का निधन हो जाता है।

अन्य मनोवैज्ञानिकों ने सोचा कि जो उन्होंने खोया है वे उनकी प्रतिक्रियाओं द्वारा वर्णित नहीं किया जा सकता। वे सोचते थे कि अवसाद का कारण अपनी माँ और सामान्य स्थितियों के स्थान पर किसी अन्य अभिभावक के साथ रहना है।

विश्वास अथवा अविश्वास

मनोचिकित्सक इरीक इरीक्सन मानते हैं कि बच्चे के जीवन का आरंभिक समय उसके विकास हेतु महत्वपूर्ण होता है जिसे वह विश्वास कहते हैं। बच्चे की जरूरतों को सरलता से पूरा करने वाला देखभालकर्ता बच्चे के लिए विश्वास का पात्र होता है। इरिक्सन के अनुसार वह बच्चा जो अपने जीवन के आरंभ के कुछ वर्षो में एक साधारण अनुमानित स्थितियों में नहीं रहता उसमें अविश्वास आ जाता है जो उसके स्वास्थ्य को भावनात्मक रूप से बहुत प्रभावित करता है।

अगले छह महीनों में, बच्चा प्रारंभिक देखभालकर्ता के रूप में अपनी माँ से सामाजिक संबंध स्थापित करता है, जिसमें शारीरिक जुड़ाव भी सम्मिलित है, जो पहले से ही होता है। प्रारंभिक देखभालकर्ता के साथ लंबे समय से अलग रहने पर बच्चे के भावनात्मक विकास को बहुत क्षति पहुँचती है।

नौ माह के बाद नये और अपरिचित पर्यावरण के कारण भी माँ से अविश्वास बढ़ने लगता है। एरीक्सिन के अनुसार बाल्यावस्था के उत्तर काल के बाद माँ या कोई अन्य आरंभिक देखभालकर्ता ही होता है जिस पर बच्चा अपनी सुरक्षा के लिए निर्भर रह सकता है। जब प्रेम और देखभाल की यह स्थिति एक दम से दूर हो जाती है, तो कुछ बच्चे अवसाद में चले जाते हैं। बच्चे प्राकृतिक रूप से ही पहले देखना और समझना आरंभ करते हैं उसके बाद रेंगना-घिघियाना शुरू कर देते हैं। एक वर्ष के बीच में या एक वर्ष तक अधिकतर बच्चे अपनी अस्थिर टाँगों से बहुत सारी चीजों तक पहुँच जाते हैं। वे चीजों और लोगों दोनों को नियंत्रित करना सीख जाते हैं। वे खिलौनों के साथ खेलते हैं और उन्हें खराब कर देते हैं। वे उसे अच्छी-अच्छी ध्वनि निकालने के लिए खोल-बंद करते रहते हैं। एक वर्ष का होने के बाद बच्चा अपने शरीर, भावनाएँ आवश्यकताओं और विचारों में अंतर कर सकता है और अन्य लोगों और चीजों में अंतर कर सकता है।

आमतौर पर पहला और दूसरा वर्ष दो शारीरिक परिवर्तनों, चलना और शौच जाना में चला जाता है। बच्चे तब चलना शुरू करते हैं जब उनका इंद्रीयगामक सामंजस्य और मांसपेशियों के विकास से चलना संभव हो पाता है। शौच जाने के लिए उन्हें अपने शरीर में पहले से निहित शारीरिक गतिविधि को नियंत्रित करना सीखना होता है। कार्य को करने के लिए प्रशिक्षण सकारात्मक या नकारात्मक मजबूती देता है। विकासात्मक मनोवैज्ञानिक ऐसा मानते हैं कि शौच जाना सिखाने के लिए आसपास का वातावरण अनुकूल होना चाहिए और छोटे-छोटे प्रयासों पर भी प्रशंसा करनी चाहिए।

शैशवकाल में भावनात्मक विकास

कुछ रिपोर्टें दर्शाती हैं कि बच्चे भी अभिभावकों को प्रभावित करते हैं। हँसते-खेलते बच्चे को अधिक प्यार-दुलार मिलने की संभावना होती है। जिद्दी व हमेशा माँग करते रहने वाले बच्चों की तरफ ध्यान भले दिया जाए पर यह अभिभावकों के धैर्य को खत्म कर सकता है। स्वीकृत व अस्वीकृत करने का यह चक्र संपूर्ण बाल्यावस्था में चलता रहता है। हालाँकि बच्चा व उसका पालनकर्ता एक दूसरे को प्रभावित करते हैं जो कि उसकी खोई माँ को किसी अन्य देखभाल करने वाले व्यक्ति और सामान्य स्थितियों से प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। बहुत से अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि समाज में रहने वाला बच्चा भूख से अपनी ओर ध्यान खींचता है और प्रेम का पात्र बनता है।

जब अनाथालय में स्थितियाँ अच्छी थीं, सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास सामान्य स्तर से आगे बढ़ रहा था। उन बहुत से बच्चों को जिन्हें संस्थानों में अच्छी देखभाल मिल रही थी या जो अपने परिवार के साथ रहते थे बहुत ही कम अंतर था। माँ का अभाव वहाँ इतना महत्वपूर्ण कारक नहीं दिखता था। बच्चे के विकास में प्रेम, देखभाल, अच्छा आहार, आसपास का वातावरण एक महत्वपूर्ण अंतर दर्शा सकता है।

पूर्वस्कूली विकास

तीन से चार वर्ष का होने तक, कोई बच्चा व्यस्क होने की लंबाई का आधा जितना लंबा हो जाता है। जैसे-जैसे बच्चा स्कूल जाने से पहले बड़ा होता है वह नई-नई चीजें सीखता है जैसे गेंद फेंकना, भागना, चढ़ना, चित्र बनाना और स्वयं कहीं पहुँच जाना और तैयार होना। स्कूल से पहले बच्चों को अपनी मांसपेशियों का प्रयोग करने के लिए नई-नई चीजें सीखनी होती हैं, वह भागना सीखता है, तेज-तेज चिल्लाना और नई-नई बातें सीखता है। स्कूल जाने से पहले बच्चा स्वतंत्र होता है।

खेलने का व्यवहार

औसतन चार से पाँच वर्ष का बच्चा बाहर निकल कर अन्य बच्चों के साथ खेलना चाहता है। स्कूल जाने से पहले वाले बच्चे अपने बड़ों के कामों की नकल करते हैं। विकास की नजर से, ऐसे अनुकरण करने वाले खेल बच्चों के प्रति जिम्मेदारी का अहसास कराती हैं। ऐसे खेल चाहे किसी व्यस्क के लिए बिल्कुल अनुपयोगी हों परन्तु बच्चे के लिए आवश्यक हैं। मनोवैज्ञानिक **एल जोसफ स्टोन और जोसफ स्टोन चर्च** ने ऐसे निम्नलिखित प्रमुख से तरीके बताए हैं जिनसे स्कूल जाने से पहले किसी बच्चे के व्यवहार का विकास किया जा सकता है–

(1) लगभग सभी बच्चे अपने काम स्वयं कर पाते हैं, तैयार होना, सोने के लिए बिस्तर पर जाना, घूमना, शौच जाना। बहुत से सामान्य क्रियाकलाप माता-पिता के लिए भले ही सामान्य हों परन्तु बच्चे के लिए उसे करना मजेदार है।

(2) खेलना अधिक उद्देश्यपूर्ण और निर्देशित बनता है। बच्चे अधिक गंभीर बनते हैं।

(3) बच्चे दुनिया में भरोसा कर पाते हैं जो कि वास्तविक दुनिया से भिन्न है जहाँ लोग अपनी ताकत का प्रयोग करते हैं।

(4) खेलने से बच्चा अधिक कल्पनाशील और सामाजिक बनता है। नये कौशलों और ज्ञान से बच्चा अधिक रचनात्मक बनता है।

(5) खेलना नाटकीय होता है, बच्चे परिवार या समाज की वास्तविक दुनिया से ही भूमिकाओं की कल्पना करते हैं। जैसे वे माता-पिता का अनुकरण करते हैं या डॉक्टर व मरीज की भूमिका निभाते हुए खेल खेलते हैं।

पाँच वर्ष तक बच्चे वे खेल खेलते हैं जो उन्हें आसपास की दुनिया में नजर आता है। बच्चे वास्तविक खिलौनों से खेलने लगते हैं जैसे डॉक्टर का बैग, गुड़िया, रसोई के बरतनों के खिलौने, गाड़ियों के खिलौने जो कि आधुनिक जीवन का संकेत देते हैं।

बच्चे की वृद्धि एवं बौद्धिक विकास

बच्चों में सोच कैसे विकसित होती है, इस बात में सबसे अधिक योगदान मनोवैज्ञानिक जीन प्याजे का है। प्याजे ने स्वयं के बच्चे का शुरू से 50 वर्ष तक अवलोकन किया। उन्होंने पहचाना कोई बच्चा अपने बौद्धिक व संज्ञानात्मक विकास के दौरान अनुक्रमिक चरणों में ऐसा कैसे कर सकता है या नहीं कर सकता है। उन्होंने महसूस किया कि सीखने के लिए, सोचने के लिए बच्चे को नए रूपों में सूचना का विकास करना जरूरी है। ऐसा केवल तभी हो सकता है जब बच्चा ऐसा करने के लिए बौद्धिक रूप से तैयार हो।

उदाहरण के लिए, एक बच्चा जो रात को सैर के लिए जाए तो वह चाँद को देखकर सोच सकता है कि शायद चाँद उसका पीछा कर रहा है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होगा वह समझने लगेगा कि जो दिख रहा है जरूरी नहीं उस पर विश्वास किया जा सके।

उनके लिए किसी चीज का दिखाई न देना का अर्थ यह नहीं है कि वास्तव में उसका अस्तित्व नहीं है। जबकि एक साल से छोटे बच्चे के लिए जो उसे दिखाई नहीं देता, वह मान लेता है कि वह है ही नहीं। किसी खिलौने को भी दिखाकर बार-बार उससे दूर किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए दस से ग्यारह महीने के बच्चे के साथ लुका-छुपी का खेल खेलते हुए जब आप अपना चेहरा उससे छिपाते हैं और फिर दिखाते हैं तो वह हैरानी से देखता है। अपना चेहरा छिपाने से उसे लगता है जैसे आप हैं ही नहीं। बारह माह के बच्चे में वस्तुओं की स्थिरता की समझ का विकास होता है।

अनुभव और विचार

बच्चों के विकास के दौरान होने वाले कुछ आकस्मिक बदलाव जो आमतौर पर एक निश्चित समय पर ही होते हैं जिनमें से प्रत्येक संज्ञानात्मक विकास की ओर जाता है। प्याजे ने समझाया है कि कैसे एक बात दूसरे से संबंधित है और बच्चे के विकास में भागीदारी करती है। बच्चे अपनी समझ के साथ परिस्थितियों से मिले अनुभवों से सीखते हैं ओर उन अनुभवों को नए-नए तरीकों से समझने की क्षमता रखते हैं। पिछले अनुभव और विचार दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ

प्याजे ने संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में विभाजित किया है। ये शैशवकाल से लेकर पूर्व किशोरावस्था तक हैं। प्याजे के अनुसार बच्चा एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है और यह क्रम बच्चों व संस्कृति के अनुसार बदलता नहीं है :

अवस्था-1 इंद्रिय-गामक (0-2 वर्ष)

अवस्था-2 पूर्व संक्रियात्मक (2-7 वर्ष)

1. पूर्व प्रत्ययात्मक काल
2. आंतप्रज्ञा काल

- अवस्था-3 मूर्त संक्रियात्मक (7-11 वर्ष)
- अवस्था-4 औपचारिक संक्रियात्मक (11 वर्ष और इससे अधिक)

अवस्था-1

दो वर्ष की आयु तक, बच्चा छूकर दुनिया के बारे में बहुत कुछ सीख जाता है। इस ज्ञानेन्द्रिय काल में कुछ भी अमूर्त नहीं होता, सब कुछ अनुभव करके सीखता है। इस काल में बच्चा सीखता है कि कम के परिणाम होते हैं।

उदाहरण—एक गेंद केवल तब नहीं उछलती जब वह उसे उछालता है जबकि कोई भी उसे उछालेगा तो वह उछलेगी। यह अवस्था सामयिक विचार की शुरुआत को दर्शाता है।

जब बच्चा अपनी ही दुनिया में होता है। तब बच्चे से यदि पूछा जाता है कि आपने क्या देखा और मैंने क्या देखा? दो वर्ष का बच्चा बताएगा कि उसने क्या देखा, प्याजे इस अनुभव को इस तरह मानते हैं कि बच्चा यह समझ नहीं पाता कि पर्यावरण दूसरों के लिए अलग हो सकता है, इसे **आत्मकेन्द्रित** होना कहते हैं।

जिस बच्चे को शैशवकाल में प्यार और देखभाल मिलती है उसकी भावनाओं का मजबूती से विकास होता है।

अवस्था-2

दूसरी अवस्था में बच्चे की मुख्य उपलब्धि बाहरी दुनिया को अपने मस्तिष्क में प्रदर्शित करने की है। ज्ञानेन्द्रिय अवस्था में जो बच्चा ब्लॉक्स से खेल रहा है वह जानता है कि दो में दो ब्लॉक्स जोड़ने से चार ब्लॉक्स बन जाते हैं क्योंकि वह उन्हें देख सकता है। दूसरी अवस्था में, पूर्ववर्ती विचार की अवस्था में, किन्हीं भी वस्तुओं के लिए निश्चित मात्रा का चिह्न।

पाँच या छह वर्ष की आयु तक बच्चा संख्या, किसी वस्तु को किसी साँचे में डालना, उनकी व्यवस्था को समझ जाता है। क्षेत्र का संरक्षण और भार जैसे विषय वह सात से दस वर्ष का होने पर समझता है।

बच्चे को बिना देखे ज्ञात नहीं होगा कि मकान क्या होता है। इन्हीं चिह्नों के द्वारा बच्चे भूत और भविष्य की घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं कभी-कभी अवस्था 2 में बच्चा सीखने के लिए तैयार नहीं होता। इनमें से एक विषय है संरक्षण। इसका अर्थ है कि किसी चीज की मात्रा समान रहती है चाहे उसका आकार परिवर्तित हो जाए। उदाहरण के लिए-यदि किसी लंबे वर्तन के पानी को चौड़े वर्तन में डाल दिया जाए तो बच्चा चौड़े वर्तन के पानी को कम कहता है क्योंकि वह कारण और परिणाम को अलग नहीं कर पाता है।

अवस्था-3

मूर्त कार्यों की इस अवस्था में निर्मित तर्क का विचार संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बच्चे माप, वर्ग और संबंध और स्थान की अवधारणा को समझने के लिए छलांग मारते हैं।

इसमें, बच्चे संरक्षण का विचार भी समझ जाते हैं। ग्यारह वर्ष का बच्चा जानता है कि उसने मक्खन का आधा कप पकड़ा है। वह इसे कप में डालकर माप सकता है। इस अवस्था तक बच्चा मापने की विधि को समझ जाता है।

अवस्था-4

औपचारिक कार्यो में सक्षम व्यक्ति बिना किसी गति के किसी समस्या को कई स्थितियों से देख सकता है। यद्यपि अवस्था-3 में किसी बच्चे में प्रमाण के आधार कारण जानने की योग्यता होती है। पर जैसे-जैसे बच्चे किशोरावस्था की ओर बढ़ते हैं वे अधिक आदर्श रूप में सोचने लगते हैं।

किशोरावस्था से पहले कोई बच्चा उन चीजों को जोड़कर जिनमें समान गुण हैं, विषय को समझता है। चिह्न, शब्द, संख्या या अन्य चिह्न चिंतन करने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किशोरों के पास कई विषय होते हैं और वे वयस्क की तरह तथ्यों और कार्यो को संगठित कर सकते हैं। वे संभावित कार्य और उसके परिणामों का अंदाज लगा सकते हैं।

उदाहरण के लिए—शतरंज खेलना, किसी बच्चे के लिए शिक्षा नर्सरी की कविताओं को सुनना भी हो सकता है, इससे उसकी भाषा का विकास होगा।

बौद्धिक विकास : उत्प्रेरक एवं अवस्था

कई मनोवैज्ञानिक अनुसंधान दर्शाते हैं कि शिशु और बच्चे कई अनौपचारिक तरीकों से प्रेरित किए जा सकते है जो उनके बौद्धिक विकास के लिए लाभकारी होगा और बाद में उनके विद्यालय जीवन में।

हॉर्वर्ड के मनोवैज्ञानिक **बुरटन एल वाइट्स** ने दस वर्षों से सौ से अधिक शिशुओं पर उनके घर के वातावरण में अध्ययन किया। वाइट के अनुसंधान ने उनके सामने निष्कर्ष रखा कि किसी भी बच्चे को 18 से 36 माह तक उस प्रकार शिक्षा नहीं मिली जिसकी वह क्षमता रखता था।

इसमें यह भी सम्मिलित है कि कोई उनसे सहज ढंग से कह रहा है कि उन वस्तुओं का भी उल्लेख करे जिसे एक बच्चा संभाल सकता है। रात को सोते समय बच्चे को सरल कहानियाँ सुनाने का सुझाव दिया गया है। बच्चे को किसी सुरक्षित स्थान पर घूमने देना चाहिए ताकि वह नई-नई चीजों से परिचित हो सके।

उदाहरण—लुका-छुपी का खेल खेलना। बच्चे के पसंदीदा खिलौने छिपा देना और ढूँढ़ने के लिए कहना।

इससे ऊपर यह बच्चों में जिज्ञासा को प्रेरित करता है ओर उनमें से कुछ उनमें शीघ्र संवेदनशील मोटर कौशल को विकसित करने में सहायक रहती हैं। खेलते समय उनकी निगरानी की आवश्यकता होती है जैसे एक सामान को उठा कर दूसरी जगह रखना।

8 से 14 महीनों तक बच्चे की समझ और कौशल का विकास बहुत तेजी से होता है। माता-पिता उनके सामने बड़ों की तरह बात करते हैं। परन्तु वे ऐसे शब्द सीखने के लिए उन्हें बाध्य नहीं करते। वाइट्स मानते हैं कि उन्हें बच्चों के साथ नए-नए खेल खेलने चाहिए जिसमें उनके अधिक कौशलों का विकास हो सके परन्तु आवश्यकता होने पर उनकी मदद करें।

चौदह महीने का होने के बाद बच्चा साधारण कारण और परिणाम संबंध को समझने लगता है और अधिक कठिन खेल भी खेलने लगता है और अधिक कठिन खेल भी खेलने लगता है। सबसे ऊपर, माता-पिता को बच्चों में सीखने के नैसर्गिक उत्साह को बनाना चाहिए जैसा कि एक वर्ष से दो वर्ष और आधे वर्ष से दो वर्ष तक देखने को मिलता है। सीखने के उत्साह को बढ़ाने से बच्चे द्वारा नवीन जानकारी को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है जो उनके लिए लाभकारी होता है।

तीसरे वर्ष में माता-पिता बच्चे को कई तरीकों से सीखने में प्रोत्साहित कर सकते हैं। माता-पिता को बच्चे के सामने नये-नये शब्दों का प्रयोग करना चाहिए और उन्हें उनका प्रयोग कराने में मदद करनी चाहिए। शब्दों की छोटी-छोटी बातों पर उनका ध्यान दिलाना चाहिए और कारण और परिणाम समझाना चाहिए तथा उन्हें थोड़ी मुश्किल चीजों को करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

एक कारक जो बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण है वह है पोषक आहार। पहले दो वर्षों में मस्तिष्क का विकास तेजी से होता है। इस दौरान एक सामान्य बच्चे में मस्तिष्क की कोशिकाएँ तेजी से बढ़ती हैं। पर्याप्त आहार में कमी बच्चे की प्रगति को कम करता है। जो बच्चे ठीक से खाना नहीं खाते उनमें भाषा संबंधी और बौद्धिक विकास की समस्या देखने को मिलती है। यह एक विवाद का विषय है। टेलीविजन बच्चों का शब्द ज्ञान बढ़ाता सा प्रतीत होता है परन्तु अन्य क्रियाओं से मिलने वाले लाभ को त्याग कर अधिक टेलीविजन देखना हानिकारक है।

छह साल की आयु तक बच्चा मानसिक **संरक्षण की समस्या** से गुजरता है। प्याजे ने इसे दर्शाने के लिए नींबू का प्रयोग किया। उसने नींबू के रस को दो एक जैसे गिलासों में एक जितनी मात्रा में डाला। पाँच, छह और सात वर्ष के बच्चों ने मान लिया कि इसकी

मात्रा समान है। फिर उन्होंने उसी नींबू के रस को लंबे और पतले गिलासों में पलट दिया। परीक्षण करने वाले ने स्वयं के लिए नींबू का रस पहले वाले गिलास में ही रखा फिर पूछा किसके पास अधिक है? पाँच वर्ष के बच्चे ने कहा कि उनके लंबे गिलासों में वह रस ज्यादा है। छह वर्ष के बच्चे निश्चित रूप से कुछ नहीं कह पाए लेकिन उन्हें लगा उनके पास अधिक है। सात वर्ष का बच्चा समझ गया था कि इन दोनों में कोई अंतर नहीं है।

आनुवंशिकता और पर्यावरण

सनास्टैसी के अनुसार पर्यावरण वह हर चीज है जो व्यक्ति के जीवन के अलावा उसे प्रभावित करती है।

वुडवर्थ कहते हैं, वातावरण में वे समस्त तत्व आ जाते हैं जिन्होंने जीवन प्रारंभ करने के समय से व्यक्ति को प्रभावित किया है। हम सभी की कुछ शारीरिक विशेषताएँ हैं। ये कुछ हद तक हमारे माता-पिता से मिलती हैं। आँखों और बालों का मिलना किसी बच्चे की पहली झलक देखकर ही देखा जा सकता है। बाद में बच्चा कई तरीकों से अपने माता-पिता जैसा दिखने लगता है। उदाहरण के लिए घुंघराले बाल होना पैतृक गुण हैं, इसी तरह से किसी का गंजा होना आनुवंशिकता है।

वे विशेषताएँ जो पीढ़ी दर पीढ़ी देखने को मिलती है, वे आनुवंशिकता के कारण होती हैं। उदाहरण के लिए, आनुवंशिकता किसी का कद निर्धारित करती है, कोई बच्चा कद में छोटा रहेगा या औसत या बड़ा ये उसके माता-पिता और दादा-दादी या नाना-नानी की शारीरिक संरचना पर निर्भर करता है।

आनुवंशिक लक्षण के उदाहरण जैसे कर्णपाली का निचला मांसल भाग या जीभ को घुमा पाना या न घुमा पाना। कुछ रोगों के विकसित होने की प्रवृत्ति जैसे दरांती कोशिका अरक्तता। इसकी जानकारी पहले से हो जाने पर इस स्थिति को स्थिर रखा जा सकता है।

अतीत के वारिस

आनुवंशिकता की महत्ता के बावजूद यह नहीं कहा जा सकता कि कोई बच्चा अपने मातापिता की तरह हूबहू दिखेगा। ऐसा कई बार देखने को मिलता है कि बच्चों की आँखों तथा बालों का रंग उनके माता-पिता से नहीं मिलता। क्योंकि ऐसा भी हो सकता है कि उनका चेहरा परिवार में किसी और से मिले। नवजात शिशु का चेहरा उनके पूर्वजों से भी मिल सकता है। ऐसा भी कभी-कभी देखा गया है कि कुछ पीढ़ियों के बाद जन्म लेने वाले किसी शिशु का चेहरा एक या दो पीढ़ियों से पहले रहे पूर्वजों से मिले। ऐसा भी हो सकता है कि कोई बच्चा लंबा हो, जबकि उसके माता-पिता की लंबाई कम हो और वह इस संबंध में अपने दादा-दादी या नाना-नानी या फिर परदादा-परदादी व परनाना-परनानी पर गया हो जो लंबे थे।

जीन और गुणसूत्र

वे बहुत से गुणसूत्र जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे पहुँचते हैं, जीन कहलाते हैं। जीन शरीर की कोशिका की सबसे छोटी इकाई होती है।

वैज्ञानिक केवल इस बात पर ही सहमत नहीं होते है कि आनुवंशिकता किसी व्यक्ति के विकास में कितनी महत्वपूर्ण है। वे वैज्ञानिक जो आनुवंशिकता की महत्ता पर जोर देते हैं उन्हें **नेटिविस्ट** कहा जाता है। वे जो विकास में सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों पर जोर डालते हैं, उन्हें **पर्यावरणविद्** कहा जाता है। सदियों से, नेटिविस्ट और पर्यावरणविद् आनुवंशिकता, वैयक्तिक विशेषताओं, आनुवंशिकता और पर्यावरण की महत्ता पर वाद-विवाद करते रहे हैं।

सदियों से वैज्ञानिक मानते थे कि आनुवंशिकता मुख्य कारक हैं। शरीर के तरल पदार्थ विशेषरूप से महत्वपूर्ण होते हैं। पित्तरस वह तरल पदार्थ है, जो आमतौर पर हरा होता है, जो लीवर से निकलता है। पहले वैज्ञानिक मानते थे कि जिस व्यक्ति को आसानी से गुस्सा आ जाता है उसका पित्तरस अधिक निकलता है, जो लोग अधिकतर समय उदास रहते हैं उनका पित्तरस काला होता है। पर आज इस विचार को कोई मनोवैज्ञानिक नहीं मानता।

पर्यावरण का प्रभाव

जो मनोवैज्ञानिक अध्ययन पद्धतियों पर अध्ययन करते हैं ऐसा मानते हैं कि पर्यावरण में बदलाव व्यक्तित्व में बदलाव कर सकता है। पर्यावरणविद मानवीय व्यवहार के संबंध में माना जाता है कि इसे बनाया जा सकता है। वे ये नहीं मानते कि बुरे स्वभाव का व्यक्ति सदैव बुरा ही रहता है। शीघ्र मिलनसार रहने वाले पूर्वज यह मानते हैं कि आने वाली पीढ़ियाँ मिलनसार ही रहेंगी जब तक कि पर्यावरण में उन्हें बदलने वाली स्थितियाँ उत्पन्न न हों।

संस्कृति का प्रभाव

कई मानोविज्ञानी किसी के व्यक्तित्व की विशेषताओं का निर्धारण करने में आनुवंशिकता की महत्ता को कम माना है। मानोविज्ञानी संपूर्ण वातावरण का अध्ययन करते हैं न कि केवल व्यक्तियों का। वे संस्कृति शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति के समूह द्वारा जीने के संपूर्ण तरीके का वर्णन करने के लिए करते हैं।

मनोविज्ञानी जैसे मारगरेट मीड और रुथ बेनीडिक्ट ने कुछ वर्षों पहले दर्शाया था कि किसी का व्यक्तित्व, विशेषताएँ किसी समूह की संस्कृति के कारण बनते हैं। कुछ इस बात पर भी वाद-विवाद करते हैं कि व्यक्तित्व का निर्माण करने में आनुवंशिकता का कोई महत्व नहीं होता। वे मानते हैं कि मानव जन्म के समय शून्य स्थिति में होता है। बच्चे का व्यक्तित्व उसके पालन पोषण पर निर्भर करता है।

मध्यवर्ती विचारधारा

सबसे प्रचलित स्थिति वह है जब व्यक्तित्व की विशेषताओं को निर्धारित करने के लिए आनुवंशिकता और पर्यावरण साथ में व्यवहार में आते हैं। उदाहरण के लिए कोई शिशु जन्म से ही कोई विशेषता जैसा काफी मुस्कुराने की आदत को लेकर पैदा होता है।

लेकिन बच्चे के अनुभव उसकी वैयक्तिक विशेषताओं को प्रभावित करेंगे जैसे यदि लोग बच्चे को देखकर मुस्कुरा देंगे तो वह विकसित होगी।

कभी किसी का अनुभव उस विशेषता को बदल भी देता है जो उसे अपने वंश से मिली हो।

उदाहरण के लिए–ऐसा भी हो सकता है कि, जन्म के समय कोई बच्चा शारीरिक रूप से औसत हो परन्तु बाद में उसे सर्वश्रेष्ठ आहार मिले और अच्छा वातावरण मिले जो उसके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जो अनुभव हम निर्धारित करते हैं वे हैं, हम कौन-सी भाषा बोलते हैं, कैसा खाना खाते हैं और कैसा संगीत सुनते हैं या अन्य कई विशेषताएँ।

मनोवैज्ञानिक अलबर्ट बंडूरा मानते हैं कि केवल पर्यावरण के कारक ही किसी के व्यक्तित्व को प्रभावित नहीं करते। ये सामाजिक अध्ययन के नियम वैयक्तिक कारक, हमारे चयन और पर्यावरण पर प्रभाव पर बल देते हैं। अपना पर्यावरण हम स्वयं बनाते हैं। यह दृष्टि इस बात को नकारता है कि लोग या तो आनुवांशिक बल या स्वास्थ्य की समीक्षा से प्रभावित होते हैं। जबकि वे अपने व्यवहार को प्रभावित करते हुए अपने जीवन का पूरा उत्तरदायित्व स्वयं पर लेते हैं।

मनोवैज्ञानिक किस तरह विकास का अध्ययन करते हैं

मानव विकास दोनों बातों पर निर्धारित होता है कि कोई जन्म के समय कैसा है और जन्म के बाद हमारे साथ क्या होता है। मानव विकास का विषय इस बात का अध्ययन करना है कि लोग किस तरह बढ़ते और बदलते हैं। वे परिवर्तन जो किसी के जीवन में आते हैं और व्यक्तियों में परिवर्तन का अंतर दोनों ही मानव विकास के विद्यार्थी की रुचि का विषय हैं। मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति के व्यवहार, शरीर और मन पर पढ़ने वाले बदलावों का अध्ययन इसमें सम्मिलित है कि मानव कैसे सीखता है। कैसे सोचता है, कैसे याद रख पाता है और कैसे अपनी समस्याओं का समाधान कर पाता है। उन्होंने कुछ अध्ययनों और अनुभवों से यह ढूँढ़ा कि कोई किस तरह विकसित होता है और विकास के संदर्भ में क्यों कुछ लोग किसी से अलग होते हैं। इसके साथ-साथ मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि लोगों का अधिकतर विकास पर्यावरण की स्थितियों या उपचार से होता है।

विकास का अध्ययन करने में प्रयोग होने वाली पद्धति

मनोवैज्ञानिक विकास को दो तरीकों से देखते हैं : **तुलनात्मक पद्धति** और **अधोमुखी पद्धति** (Comparative & Downward Method) तुलनात्मक पद्धति में, वैज्ञानिक एक ही समय में तीन वर्ष के कई बच्चों पर काफी अध्ययन करते हैं। इस अध्ययन के अनुसार वे इन बच्चों में समान कौशलों और भावनात्मक विशेषताओं को देखते हैं।

तीन साल की आयु तक बच्चा 1000 शब्द जान पाता है, लेकिन वह उन्हें पढ़ नहीं पाता। वह साईकिल चला पाता है लेकिन खुद से नहीं चला पाता। यदि हम इन बच्चों की छह साल के बच्चों से तुलना करें तो हम इनके विकास के स्तर को समझ पाएँगे। छह साल का बच्चा पढ़ना और लिखना सीखना शुरू कर देता है। वह स्वयं कपड़े पहन पाता है और अपने अन्य निजी कार्य कर पाता है

वैयक्तिक विभिन्नताएँ : बच्चे एक समान दर से नहीं बढ़ते। जैसे कोई एक वर्ष में चलना सीख जाता है तो कोई अठारह महीनों में भी नहीं सीख पाता।

भाषा को सीखने में भी अंतर होता है। यदि बच्चा सामान्य है तो वह सरल से कठिन कई तरह के कार्य सीख पाता है।

हालाँकि तुलनात्मक पद्धति हमें यह तो समझाती है कि आमतौर पर किसी बच्चे के विकास स्तर से क्या अपेक्षा रखनी चाहिए, परन्तु यह विश्वसनीय प्रमाण नहीं है। ऐसा भी हो सकता है कि किसी जगह तो किसी बच्चे को उठाना पड़ता हो, वहीं दूसरे स्थान पर कोई चलना सीख चुका हो। ऐसे बच्चे जो बड़ों से बातचीत करते हैं वे पाँच वर्ष की आयु में भी उनकी तुलना में काफी शब्द बोलना सीख जाते हैं जो बड़ों से बातचीत नहीं करते। किसी बच्चे के विकास की गति तेज व धीमी हो सकती है। जब हम किसी बच्चे की प्रगति को सामान्य मानते हैं, हम उसे किसी विशेष तरह की संस्कृति के लिए सामान्य मानते हैं।

अधोमुखी दृष्टिकोण (Downward Approach)

अधोमुखी दृष्टि एक समय आमतौर पर कई वर्षों या दशकों में एक बच्चे या बच्चों के विकास का अनुसरण करती है। क्योंकि इसमें लोगों का ध्यान रखना मुश्किल होता है क्योंकि वे चले जाते हैं इसीलिए इस तरह के अनुसंधान सामान्य रूप से कम हैं।

अधोमुखी दृष्टि का लाभ यह है कि यह बच्चों का अध्ययन विशिष्ट व्यक्ति के रूप में करता है न कि बच्चों की विकासात्मक अवस्थाओं की तरह। क्या ऐसा बच्चा जो शांत रहता है वह हँसमुख व्यवहार का बनेगा? क्या चिंतित रहने वाले बच्चे आगे चल कर बदमिजाज बनेंगे या सचेत बच्चे बुद्धिमान बनेंगे?

मनोवैज्ञानिक अब सोचते हैं कि स्वभाव की ये विशेषताएँ बहुत जल्दी निहित या निर्मित हो जाती हैं। अधोमुखी अनुसंधानों के प्रयोग से वे कुछ हद तक प्रारंभिक या बाद के अनुभवों के प्रभावों को माप सकते हैं।

बच्चों का पालन-पोषण संबंधी कार्य एवं उनके प्रभाव पूर्व बाल्यावस्था (जन्म से 5 वर्ष)

बच्चों की अपेक्षाएँ : जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं और उनमें परिवर्तन आते हैं उनके लिए मनोवैज्ञानिकों ने उन तरीकों को खोजा है, जिनसे बच्चों की मदद की जा सकती है। यदि पहले से ही यह पहचान लिया जाए कि आने वाले समय में बच्चों में क्या-क्या परिवर्तन अपेक्षित है, इस समस्या के समाधान के बारे में पहले से ही सोचा जा सकता है जैसे दृष्टि व श्रवण समस्या या सीख पाने में अक्षमता की समस्या।

इस तरह व्यवहार को पहचानने से प्रशिक्षण कौशल को बच्चे और प्रशिक्षक दोनों के लिए आसान बनाया जा सकता है। पहले से ही इस बात को जान लेना कि बच्चा अलग-अलग आयु के दौरान किस तरह का व्यवहार करता है, इससे व्यवहारिक सामूहिक क्रियाकलापों चाहे वे पड़ोसियों के साथ हों, प्ले स्कूल में हों या बच्चे का जन्मदिन का समारोह हो, की योजना बनाने में मदद मिलती है।

बच्चे के व्यवहार के अध्ययन का एक लाभ संत्रास (Panic) से बचना भी है। प्रगति के पैटर्न में यह भी सम्मिलित होता है कि

जैसे यदि कोई बच्चा खेल में कुछ समय तक प्रगति नहीं कर पा रहा तो यह कोई अधिक चिंता का विषय नहीं है, इसकी जानकारी पहले से ही अभिभावक को दी जा सकती है।

मध्य बाल्यावस्था (6–12 वर्ष)

यह अवस्था आमतौर पर दो अस्थिर कालों शैशवकाल और किशोरावस्था के मध्य एक स्थिर समय माना जाता है। जबकि मध्यम बाल्यावस्था में कई विकास होते हैं। शिक्षाविद् **रोबर्ट हैवीगर्स्ट** ने नौ **क्रियाओं** के बारे में बताया हैं जो शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास के साथ व्यवहार में हैं :

(1) सरल खेलों द्वारा शारीरिक कौशलों को सीखना।
(2) पढ़ने, लिखने और अंकगणित में मूलभूत कौशलों का विकास करना।
(3) प्रतिदिन जीवन में विकास हेतु कार्य करना।
(4) विकास की दिशा में अपनी दृष्टिकोण का विकास करना।
(5) नैतिकता और मूल्यों का विकास करना।
(6) समान आयु के बच्चों से सीखना।
(7) पुरुष व महिलाओं की सही सामाजिक भूमिका सीखना।
(8) सामाजिक समूहों और संस्थानों के प्रति दृष्टि का विकास करना।
(9) वैयक्तिक आत्मनिर्भरता को प्राप्त करना।

अत: मध्य बाल्यावस्था वह समय होता है जब बच्चा कम ज्ञान से कई तरह की भूमिकाओं को निभाता है।

मनोवैज्ञानिक एल जोसफ और जोसफ चर्च ने बाल समाज कहा है– 'प्रमाण का ऐसा मैदान जहाँ बच्चा व्यस्कों से अलग रहकर जीना सीखता है।'

इस समय के दौरान सामाजिक संबंधों को बनाने की तीव्र इच्छा होती है।

लड़के और लड़कियाँ छोटे-छोटे समूह बनाकर घनिष्ठ मित्र बन जाते हैं। ऐसे समूह में बच्चे अपनी गुप्त भाषा का प्रयोग भी करते हैं, जिन्हें केवल वही समझ सकते हैं। अपने मित्रों के समूह में रहना उनकी प्रबल इच्छा होती है वहीं उनसे अलग होने पर वे दुखी हो जाते हैं। इस काल के दौरान लड़के और लड़कियों का संबंध किशोरावस्था तथा व्यस्कों से संबंधों जैसा गंभीर नहीं होता। यह धारणा वर्ष 6 से 9 के बीच में निश्चित रूप से उचित मानी जाती है। चौथी कक्षा का विद्यार्थी अक्सर ऐसी बातें कर सकता है कि ''लड़के अच्छे होते हैं'' या मैं केवल एक ही महिला को पसंद करता हूँ, अपनी माँ को।'' हालाँकि मध्य बाल्यावस्था की शुरुआत में लड़के और लड़कियों के बीच में प्रेमालाप होती देखने को मिलती हैं।

इस अवस्था में पर्यावरण के अनुसार व्यवहार में बदलाव आता है। शहरी मध्यवर्गीय परिवारों के बच्चों को सुरक्षा के बंधन के कारण छोटे शहरों व ग्रामीण बच्चों की तुलना में कम स्वतंत्रता मिलती है। छोटे क्षेत्रों के बच्चे परिवार की आर्थिक स्थिति को विशेष रूप से समझते हैं जब वे इस कार्य में भाग लेते हैं। बच्चों की दुनिया का वातावरण उस समाज से बनता है जहाँ सभी रहते हैं।

लैंगिक भूमिकाओं की समझ

- कम समय में बच्चे पुरुष या महिला की तरह व्यवहार करना सीख जाते हैं। मध्य बाल्यावस्था के दौरान वे पुरुष व महिला की तरह व्यवहार करना सीखते हैं। लिंग की भूमिका उसके पुरुष या महिला होने पर निर्भर होती है। किस तरह इसे सीखा जा सकता है?
- विद्वान मानते हैं कि बच्चे इसे अपने बड़ों से सीखते हैं। कोई लड़का अपने पिता और अन्य पुरुष सदस्यों से सीखता है कि पुरुष कैसे व्यवहार करता है वहीं माँ व अन्य स्त्रियाँ किसी लड़की को महिला की भूमिका सिखाने में महत्वपूर्ण है।
- कुछ मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि लिंग की भूमिका विपरीत लिंग पर निर्भर करती है। उदाहरण के तौर पर कोई माँ जो खाना पकाती है, पुत्र उससे प्रभावित होकर खाना बनाने में रुचि ले सकता है।
- कुछ लोग पारम्परिक रूप से चली आ रही भूमिकाओं से ही खुश हैं जिसमें पुरुष बाहर जाकर कार्य करता है और महिला घर पर रहती है। जबकि संपूर्ण दृष्टि से देखने पर समाज में बदलाव आया है। पुरुष ओर महिलाओं की भूमिका को **सामूहिक लिंग भूमिका** के नाम से माना जाने लगा है। इस बदलते दौर में किसी की भूमिका निभाना उसके व्यक्तिगत चयन पर निर्भर करता है। आज कुछ बच्चे पारंपरिक भूमिकाओं को सीख रहे हैं वहीं कुछ सामूहिक और अधिकतर बच्चे कुछ इन दोनों स्थितियों के आसपास का ही सीख रहे हैं।

नैतिक विकास (Moral Development)

मध्य बाल्यावस्था के दौरान बच्चा मूल्यों, विचार और दृष्टिकोण विकसित करता है जो कि अन्य लोगों द्वारा संचलित किए जाते हैं। सामाजिक विकास के इस पहलु के संबंध में नैतिक धारणाएँ महत्वपूर्ण हैं जो कि कोई स्वयं व अन्यों के व्यवहार के प्रति निर्मित करता है। ऐसी धारणाएँ इस बात पर इतना निर्भर नहीं करती हैं कि हम किसी दी गई स्थिति में कैसा व्यवहार करते हैं बल्कि हम जैसा मानते हैं कि वैसा करना चाहिए इस पर निर्भर करती है।

उदाहरण के तौर पर–आमतौर पर हम किसी छोटे बच्चे पर हाथ नहीं उठाते, भले ही इसके लिए हमें सजा न मिले परन्तु हम मानते हैं कि नैतिक रूप से ऐसा करना गलत है।

बच्चा किस प्रकार नैतिक धारणाएँ बनाना सीखता है?

यह साधारण रूप से सही और गलत का अंतर सीखना है। हॉर्वर्ड मनोवैज्ञानिक **लॉरेंस कोलबर्ग** (Lowrence Kohlberg) ने इस बात पर गहराई से अध्ययन किया है कि किन आधारों पर बच्चे और युवा नैतिक निर्णय लेते हैं। वह मानते हैं कि नैतिक प्रगति शीघ्र हो जाती है और अवस्थाओं में आगे बढ़ती है।

- नैतिक मूल्य किसी व्यक्ति की आवश्यकता व इच्छाओं में निहित होता है।
- नैतिक मूल्य अच्छी व सही भूमिका निभाने में और दूसरों को खुश रखने में निहित होते हैं।
- नैतिक मूल्य सिद्धांतों में निहित होते हैं, उनसे अलग होते हैं जो उन्हें पकड़े रखते हैं और बाध्य करते हैं और जो किसी व्यक्ति की पहचान से बाध्यता से अलग होते हैं।
- कोलबर्ग ने तीन अलग-अलग स्तरों पर तीन भिन्न धारणाएँ दर्शायी हैं। हालांकि कोलबर्ग के अनुसार बहुत से लोग दूसरे स्तर से आगे नहीं बढ़ेंगे।
- कोलबर्ग के नियमों की उन लोगों द्वारा आलोचना की गई जो मानते थे कि धार्मिक आस्था के कारण लोग शुद्ध नैतिक मूल्यों पर चलते हैं।

कोलबर्ग का नैतिक विकास का स्तर

I. पूर्व परम्परागत स्तर
II. परम्परागत स्तर
III. उत्तर परम्परागत स्तर

कोलबर्ग मानते हैं कि ये अवस्थाएं एक क्रम में चलती हैं और उम्र से जुड़ी हुई हैं। 9 साल की उम्र से पहले बच्चे पहले स्तर पर काम करते हैं। अधिकतर किशोर तीसरी अवस्था में सोचते पाए जाते हैं पर उनमें दूसरी अवस्था और चौथी अवस्था के इस अवस्था में नैतिक आचरण संपूर्ण रूप से आंतरिक नियंत्रण में होता है। यह नैतिकता का उच्च स्तर होता है। कोहलबर्ग ने यह बताया कि जैसे-जैसे बालक परिपक्व होता है वैसे-वैसे उसकी नैतिकता का स्तर बढ़ता है। व्यक्ति नैतिकता के किसी भी चरण को छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता है। प्रत्येक क्रम को उसे पार करना होता है।

I. पूर्व परम्परागत या पूर्वनैतिक (Pre-Conventional or Amoral) विकास (4-10 वर्ष)

यह नैतिक विकास का सबसे निचला चरण है। इस चरण में क्या सही और गलत है, पर बाहर से मिलने वाली सजा और उपहार का प्रभाव पड़ता है।

चरण 1. आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था : नैतिकता इस पूर्व परम्परागत अवस्था का पहला चरण है। यहां नैतिक सोच, सजा से बंधी होती है। जैसे बच्चे यह मानते हैं कि उन्हें बड़ों की बातें मानी चाहिए नहीं तो बड़े उन्हें दण्डित करेंगे।

चरण 2. अहंकार की अवस्था

- इस अवस्था का कार्यकाल तीसरे वर्ष से शुरू वर्ष के शुरू होकर 6 वर्ष तक का होता है।
- इस अवस्था के बालक की सभी व्यवहारिक क्रियाएं अपनी वैयक्तिक आवश्यकता और इच्छाओं की पूर्ति के चारों ओर केंद्रित रहते हैं बालक के लिए वही नैतिक होता है जो उसके स्व अथवा आत्म कल्याण से जुड़ा हुआ हो।

व्यक्ति केंद्रित, एक-दूसरे का हित साधने पर आधारित नैतिक विकास : यह पूर्व परम्परागत अवस्था का दूसरा चरण हैं यहां बच्चा सोचता है कि अपने हितों के अनुसार कार्य करने में कुछ गलत नहीं है, पर हमें साथ में दूसरों को भी उनके हितों के अनुरूप काम करने का मौका देना चाहिए। अत: इस स्तर की नैतिक सोच यह कहती है कि वही बात सही है जिसमें बराबरी का लेन-देन हो रहा हो। अगर हम दूसरे की कोई इच्छा पूरी कर दें तो वे भी हमारी इच्छा पूरी कर देंगे।

II. परम्परागत (Conventional) स्तर (10-12 वर्ष)

यह कोलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांतों की दूसरी अवस्था है। इस अवस्था में लोग एक पूर्व आधारित सोच से चीजों को देखते हैं। जैसे देखा गया है कि अक्सर बच्चों का व्यवहार उनके मां-बाप या किसी बड़े व्यक्ति द्वारा बाए गए नियमों पर आधारित होता है।

चरण 3. प्रशंसा की अवस्था : यह कोलबर्ग के नैतिक विकास की इस स्थिति में लोग विश्वास, दूसरों का ख्याल रखना, दूसरों के निष्पक्ष व्यवहार को अपने नैतिक व्यवहार का आधार मानते हैं। बच्चे और युवा अपने माता-पिता द्वारा निर्धारित किए गए नैतिक व्यवहार के मापदण्डों को अपनाते हैं जो उन्हें उनके माता-पिता की जर में एक ''अच्छा लड़का या अच्छी लड़की'' बनाते हैं।

चरण 4. सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था

- 7 वर्ष से लेकर किशोरावस्था के प्रारंभिक काल तक यह अवस्था होती है।
- इस अवस्था का बालक सामाजिकता के गुणों को धारण करता हुआ देखा जाता है। अत: उसमें समाज के बनाए नियमों परंपराओं तथा मूल्यों को धारण करने संबंधी नैतिकता का विकास होता हुआ देखा जा सकता है।
- इस अवस्था में उसे अच्छाई बुराई का ज्ञान हो जाता है और वह यह समझने लगता है कि उसके किस प्रकार के आचरण या व्यवहार से दूसरों का हित या ठेस पहुंच रही है।

सामाजिक व्यवस्था आधारित नैतिक विकास : यह कोलबर्ग के सिद्धांतों की चौथी इस अवस्था में लोगों के नैतिक विकास की अवस्था सामाजिक आदेश, कानून, न्याय और कर्त्तव्यों पर

आधारित होती हैं। जैसे किशोर सोचते हैं कि, समाज अच्छे से चले इसके लिए कानून के द्वारा बनाए गये दायरे के अन्दर ही रहना चाहिए।

III. उत्तर परम्परागत (Post-Conventional) स्तर (13 से 19 वर्ष)

कोलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांतों के तीसरे स्तर में व्यक्ति द्वारा वैकल्पिक रास्ते खोजे जाते हैं और फिर अपना एक व्यक्तिगत नैतिक व्यवहार का रास्ता ढूंढ़ा जाता है।

चरण 5. सामाजिक समझौते की अवस्था

- यह अवस्था किशोरावस्था से जुड़ी हुई अवस्था होती है।
- इस अवस्था में बालकों का सामाजिक शारीरिक तथा मानसिक विकास अपनी ऊंचाइयों को छूने लगता है। और उसमें आत्म चेतना की शुरूआत हो जाती है।
- यह मेरा आचरण है, मैं ऐसे व्यवहार करता हूँ इसकी उसे अनुभूत होने लगती है तथा अपने व्यवहार आचरण और व्यक्तित्व संबंधी गुणों की स्वयं ही आलोचना करने की प्रवृत्ति उसमें पनपने लगती है।
- पूर्णता की चाह स्वयं से असंतुष्ट रहने का मार्ग प्रशस्त करती है। यही असंतुष्टी उसे समाज परिवेश में जो कुछ गलत हो रहा है सदा उसे बदल डालने व परंपराओं के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाने को प्रेरित करती है।

सामाजिक अनुबंध, उपयोगिता और व्यक्तिगत अधिकारों पर आधारित नैतिक विकास

यह कोलबर्ग के सिद्धांत की इस अवस्था में व्यक्ति यह सोचने लगता है कि कुछ मूल्य, सिद्धांत और अधिकार कानून से भी ऊपर हो सकते हैं। व्यक्ति वास्तविक सामाजिक व्यवस्थाओं का मूल्यांकन इस दृष्टि से करने लगता है कि वे किस हद तक मूल अधिकारों व मूल्यों का संरक्षण करते हैं।

चरण 6. विवेक की अवस्था

- नैतिक व चारित्रिक विकास की यह चरम अवस्था है परिपक्वता ग्रहण करने के बाद ही इस अवस्था का विकास संभव है।
- जिस प्रकार के नैतिक आचरण और चारित्रिक मूल्यों की बात बालक विशेष में की जाती है। उसके पीछे केवल उसकी भावनाओं का प्रवाह मात्र ही नहीं होता। बल्कि वह अपनी मानसिक शक्तियों का उचित प्रयोग करता हुआ। अच्छी तरह सोच समझकर इसी व्यवहार विशेष को अपने व्यक्तित्व गुणों में धारण करता हुआ पाया जाता है।

किशोरावस्था का काल

12 से 14 वर्ष की आयु में बच्चा बचपन से निकल कर किशोरवस्था में प्रवेश करता है। इस अवस्था में उस पर सामाजिक दबावों और शारीरिक बदलावों के चलते व्यवहार में अलग तरह के परिवर्तन होने लगते हैं :

किशोरावस्था में बालक को अनेक शारीरिक परिवर्तनों से गुजरा पड़ता है। इसलिए स्टेनले हॉल ने कहा है कि, 'किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।' किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंतकाल माना गया है। यह काल तेरह से उन्नीस वर्ष तक रहता है, परंतु किसी किसी व्यक्ति में यह बाईस वर्ष तक हो सकता है। यह काल भी सभी प्रकार की मासिक शक्तियों के विकास का समय है। भावों के विकास के साथ-साथ बालक की कल्पना का विकास होता है। उसमें सभी प्रकार के सौंदर्य की रुचि उत्पन्न होती है और बालक इसी समय नए-नए और ऊंचे आदर्शों को अपनाता है। बालक भविष्य में जो कुछ होता है, उसकी पूरी रूपरेखा उसकी किशोरावस्था में बन जाती है।

शारीरिक परिवर्तन

औसत रूप से लड़कियों में शारीरिक परिवर्तन साढ़े 10 से साढ़े 12 वर्ष के अंतराल पर, वहीं लड़कों में साढ़े 12 से साढ़े 14 वर्ष के दौरान देखने को मिलते हैं। इसके आगे दो वर्ष के दौरान लड़कों में लंबाई बढ़ने लगती है, चेहरे पर हल्की दाढ़ी आने लगती है व आवाज में पिता के समान भारीपन आने लगता है व यौन अंगों का विकास होने लगता है। लड़कियों में महिला की आकृति का विकास होने लगता है। उनका वक्ष विकसित होने लगता है। शारीरिक विकास यौन परिपक्वता का आरंभ होता है। शरीर में अचानक ये परिवर्तन क्यों आते हैं? मस्तिष्क में पीयूष ग्रंथि से खून के माध्यम से हॉरमोन का स्राव पहुँचने लगता है। मुख्य ग्रंथि पीयूष कई ग्रंथियों को नियंत्रित करती है।

- पीयूष ग्रंथि द्वारा नियंत्रित होने वाली अधिवृक्क, थाइराइड और जननग्रंथियाँ हैं। अधिवृक्क ग्रंथि तनाव संबंधी स्थितियों से प्रभावित होती हैं। थाइराइड ग्रंथि शरीर का पाचन, ऑक्सीजन का प्रयोग और साधारण गतिविधियों को नियंत्रित करती है। जननग्रंथियाँ यौन परिवर्तन करती हैं। ये प्रजनन में सहायक वीर्य और डिंब को उत्पन्न करने में सहायक हैं। ये सभी छोटे-छोटे अंग आपस में कार्य करते हैं। जरूरत पड़ने पर यह अंग दूसरों को संकेत देते हैं और हॉर्मोन आसानी से सक्रिय हो जाते हैं।
- इसी कारण से किशोर खतरे को देखकर शीघ्र प्रतिक्रिया देते हैं और शारीरिक रूप से आकर्षक व्यक्ति को देखकर उसकी तरफ ध्यान देने लगते हैं।

सारणी 1. इरीक इरीक्सन द्वारा दी गई विकास की अवस्थाएँ				
	अवस्था	**अनुमानित आयु (वर्ष)**	**विकास का परिणाम अच्छा है**	**विकास का परिणाम संदिग्ध है**
I.	शैशवकाल	0–1	विश्वास	अविश्वास
II.	बाल्यावस्था	2–3	स्वायत्ता	शर्म एवं संदेह
III.	खेलने की उम्र	4–5	पहल	अपराध बोध
IV.	विद्यालय जाने की उम्र	6–11	परिश्रम	हीनता
V.	किशोरावस्था	12–20	पहचान	भूमिका का संदेह
VI.	वयस्क	21–35	अंतरंगता	अलगाव
VII.	मध्यम आयु	35–65	उत्पादक	आत्मावलोकन
VIII.	वृद्धावस्था	65+	संपूर्णता	निराशा

- हालाँकि हॉर्मोन जीवन-भर सक्रिय रहते हैं। परन्तु यह **तरुणावस्था** (Puberty) लड़कियों में तेजी से गतिशील हो जाते हैं और इसका प्रभाव किशोरावस्था पर पड़ता है। अचानक से लड़के व लड़कियों के शरीर में बदलाव देखने को मिलते हैं, चाहे तब भी विचार और भाव बच्चों जैसे हों। हालाँकि किशोरावस्था में शारीरिक उत्तेजनाओं का होना जैविक क्रिया है परन्तु इसे महसूस करने को अनुचित मानना हमारी संस्कृति की अपेक्षा मानी जाती है।

पारिवारिक प्रभाव

कई अध्ययन ऐसा दर्शाते हैं कि किशोर का व्यवहार आरंभ में घर पर मिले अनुभव पर निर्भर करता है। ये अनुभव आमतौर पर ऐसे तरीकों पर ध्यान दिलाते हैं कि बच्चे का पालन-पोषण सख्ती से किया गया है या उदारता से, प्रेम से किया है या अस्वीकृति से या प्रोत्साहन से किया है या उदासीनता से। ऐसा माना गया है कि जैसे कोई किशोर तभी विश्वसनीय बनता है जब उसे प्यार मिलता है और संभवत: देखा गया है कि जो किशोर अपराध करते हैं, उन्हें असंगत दंड मिले हों और उनके साथ एकपक्षीय ढंग से व्यवहार किया गया हो।

किशोरावस्था के आयाम

कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी, बर्कले की डायना बामरिंड, ने किशोरों और उनके परिवार पर कई विचारों पर अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष, ने पालन-पोषण के तरीकों और किशोरों में संस्कारों के विकास में मजबूत संबंध स्थापित किया। उनकी कुछ स्थापनाएँ निम्नलिखित हैं–

(1) सामाजिक रूप से सक्षम किशोर ऐसे घरों से आते हैं जिनका सामाजिक स्तर और आत्म सम्मान बहुत ऊँचा होता है। किशोर स्वयं को अपने परिवार के आदर्श के रूप में दिखाते हैं।

(2) सफल और आत्मनिर्भर किशोरों के अभिभावक उन्हें कुछ बड़ा परन्तु व्यवहारिक करने के लिए बाध्य करते हैं। यदि बच्चा माता-पिता की उम्मीद पूरी नहीं कर पाता तब बाध्यता में आलोचना और विरोध शामिल होता है वहीं जब बच्चा सफल हो जाता है तो कार्य और सहयोग सम्मिलित होता है।

(3) जो किशोर अपने माता-पिता से बात कर पाते हैं उनमें आत्मविश्वास होता है कि वे जिस पर विश्वास रखते हैं, वे उस कार्य को आत्मनिर्भता व अहिंसा से कर सकते हैं। जो अभिभावक अपनी माँगों की व्याख्या नहीं करते उनके बच्चे आत्मनिर्भर होते हैं।

बामरिंड परिवारों के पालन-पोषण और किशोरों के व्यवहार के बारे में कई विचार व्यक्त करती हैं। वे मानती हैं कि जो बच्चे परेशानी में होते हैं उनके परिवारों में अनुशासनहीनता और भावनात्मक रूप से अलगाव देखने को मिलता है। जब माता-पिता बेटियों से अधिक अपेक्षा रखने लगते हैं लड़कियाँ आत्मनिर्भर होकर रहना चाहती हैं। वे चाहती हैं कि अभिभावक उन्हें आवश्यकता से अधिक सुरक्षा न दें।

किशोरावस्था के व्यक्तित्व

स्टोन और चर्च, ने कई अवलोकन किए और किशोरावस्था के व्यक्तित्व को निम्नलिखित चार भागों में वर्गीकृत किया–

(1) परंपरावादी–कभी-कभी ही कुछ अलग सोचते हैं। उनका उद्देश्य समाज के अनुसार चलना ही होता है। ये धार्मिक प्रवृत्तियों को स्वीकार करते हैं और इनके पारिवारिक संबंध अच्छे होते हैं इनके तौर तरीके अच्छे होते हैं ओर ये स्वयं इच्छा से कार्य करते हैं। हालाँकि इन्हें मजा करना पसंद होता है। ये केवल उन्हीं स्थानों पर भागीदार बनते हैं जिन्हें सामाजिक रूप से स्वीकृति प्राप्त होती है या जो उचित माने जाते हैं।

(2) आदर्शवादी–समाज में बदलाव लाना चाहते हैं। वे अन्याय के प्रति संवेदनशील होते हैं। वे विश्व को बदलने के लिए अध्यापन, चिकित्सा जगत में कार्य चुनते हैं या समुदायिक कार्यों में सम्मिलित रहते हैं।

(3) सुखवादी–भविष्य की चिंता न करते हुए वर्तमान में जीते हैं। इनका जीवन सुख से भरा होता है और ये किसी ऐसे कार्य की तलाश में रहते हैं जो इन्हें आगे बढ़ते के लिए दबाव बनाए। हालाँकि ये जीवन का आनंद लेते हुए प्रतीत होते हैं। ऐसे लोग स्वयं व बाहरी दुनिया दोनों से अलग रह कर मस्त स्वभाव के होते हैं।

(4) मनोरोगी–इस बात से अनजान होते हैं कि वे दूसरों पर अपना दबाव बनाते हैं। वे दूसरों के लिए नैतिक रूप से सजग नहीं होते और उनके कोई सिद्धांत नहीं होते। वे स्वार्थी होते हैं और उन्हें

इस बात का अपराधबोध भी नहीं होता। इसीलिए, परवाह किए बिना दूसरों को नुकसान पहुँचाने में भी नहीं चूकते। वे क्रूर स्वभाव के होते हैं और खतरनाक भी।

उल्लेखनीय है कि परंपरावादी समाज के लिए आदर्शवादी हो सकते हैं और आदर्शवादी मन से परंपरावादी हो सकते हैं। हममें से कुछ के अंदर सुखवादियों के लक्षण होते हैं और कुछ के अंदर मनोरोगियों के लक्षण भी होते हैं। जब हम अपनी चेतना में नहीं होते, हम दूसरों का बुरा करने पर भी अपराधबोध महसूस नहीं करते। किशोरावस्था के ये व्यवहार 20 या 21 वर्ष के होने पर एकदम से समाप्त नहीं हो जाते। बहुत सी धारणाएँ व्यस्क होने तक रहती हैं। उदाहरण के तौर पर परंपरावादी किशोर जब बड़े भी हो जाते हैं तब भी उनका व्यवहार ऐसा ही रहता है।

मनोसामाजिक विकास (Psycho-Social Development) हेतु एरिक्सन का नियम

मनोविश्लेषक **इरीक इरीक्सन** मानव विकास को मनोसामाजिक अवस्थाओं की श्रेणी के रूप में सोचते हैं। प्रत्येक अवस्था में किसी बच्चे के व्यक्तित्व की कुछ निश्चित विशेषताएँ उभरती हैं। ये विशेषताएँ जीवन भर बनी रहती हैं जब तक आगे चलकर कुछ अलग तरह का अनुभव न हो।

एरीक्सन कहते हैं बच्चों द्वारा आरंभिक देखभाल-कर्ता पर विश्वास किया जाना आवश्यक है, जो आमतौर पर उसकी माँ होती है। यदि ऐसा न हो तो भविष्य में वह संबंधों पर विश्वास करने में समस्या का अनुभव करेगा।

- एरीक्सन के अनुसार, प्रत्येक अवस्था व्यक्ति के विकास संकंट को दर्शाती है। इरीक्सन ने संकट शब्द प्रयोग सामान्य विकास के संबंध में किया है। हम सभी जीवन में संकट का अनुभव करते हैं। यदि हम उसे सकारात्मकता से सुलझा लेते हैं तो हमारे व्यक्तित्व का विकास हो जाता है। यदि नहीं कर पाते तो नकारात्मक विशेषताएँ आ जाती है। अधिकतर लोग न तो 100 प्रतिशत सफल होते हैं और न ही 100 प्रतिशत असफल। वे इन दोनों स्थितियों के बीच में होते हैं। इरीक्सन मानते हैं कि आरंभ में चिकित्सा के जरिए इसे सुलझाया जा सकता है।
- एरीक्सन की अवस्थाओं को **सारणी-1** में दर्शाया गया है। प्रत्येक अवस्था में लगभग आयु के बारे में बताया गया है। इरीक्सन ने देखा कि अलग-अलग लोग अलग अवस्थाओं में अलग-अलग अनुभव करते हैं।
- एरीक्सन के मतानुसार शैशवकाल से किशोरावस्था तक बच्चे की प्रगति निर्भर करती है। दो से तीन वर्ष का होने पर बच्चा दुविधाओं से ऊपर उठने लगता है। अपने आसपास की चीजों के साथ खेलकर वह नियंत्रण स्थापित करना सीख जाता है। वह स्वयं शौच जाना सीखता है जो उसे आत्मनिर्भरता का बोध कराता है।
- चार से पाँच की आयु में पहुँच कर वह प्रोत्साहित करने पर आगे सोचता है। इस अवस्था में वह पहल करना सीखता है और बड़ों को यह समझना मुश्किल हो जाता है कि चार या पाँच वर्ष का बच्चा यह समझ पा रहा है कौन सा काम उसके लिए करना सुरक्षित है।
- छह से ग्यारह वर्ष के दौरान वह दुर्बलता से उठकर विद्यालय व अन्य सामाजिक संस्थानों में मूलभूत कौशलों का विकास कर पाता है। घर से बाहर मिलने वाले लोगों का प्रभाव उसके जीवन के लिए महत्वपूर्ण बन जाता है। यदि वे बाहर निकल कर क्रियाकलापों को करने में सफल हो जाता है तो उसके मन में सफलता का अहसास होता है अन्यथा वह स्वयं को हीन समझने लगता है।

अन्तर्मन में झांकना

इससे आगे जाकर यदि हम अस्तित्व के संकट की बात करें, एरीक्सिन मानते हैं कि यह इस भावना का विकास है कि तुम कौन हो? जिसका संबंध व्यक्ति के अस्तित्व से हो। यह आमतौर पर चरण 5 में होता है। किशोरावस्था में यह सामने आना कि वास्तव में आप वैसे नहीं है जैसा कि आप सोचते हैं जिसे जानकर आप अकसर हैरान हो जाते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि कोई बच्चा हाई स्कूल तक फुटबॉल का बहुत अच्छा खिलाड़ी रहा हो लेकिन बाद में उसे सख्त शारीरिक क्रियाकलाप करना अच्छा न लगे, क्योंकि उसने अपना संवेदनशील और कलात्मक पक्ष अब पहचाना हो, जिसके बारे में उसे भी पता न हो कि वह ऐसा भी सोच या कर सकता है। कोई शर्मीली या घबराई हुई लड़की आगे चलकर आत्मविश्वासी महिला बन जाए। परिवर्तन कई दिशाओं में संभव होते हैं।

अस्तित्व बनने के साथ या इसके तुरंत बाद कोई किशोर आत्मनिर्भर बन सकता है या किसी की नकल करने लगता है। तब भी अकसर स्वतंत्रता आती है जब किशोर अपने घर व माता-पिता से अलग रहने लगता है लेकिन मनोविज्ञानिक स्तर पर आत्मनिर्भरता या तो पहले आ सकती है या काफी बाद में। किशोरावस्था में बच्चों की आत्मनिर्भरता को लेकर वाद-विवाद होना कई परिवारों में आम बात है।

पहचान का संकट

इरिक्सन के अनुसार, इस भावना का विकास करना कि आप कौन हैं? संभवत: उत्तर किशोरावस्था का यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण विकास कार्य है। इस काल में अधिकतर किशोर अपने तत्व पर प्रश्न करने लगते हैं। कुछ पक्ष यह होते हैं कि माता-पिता किसी से क्या अपेक्षा रखते हैं पर अस्तित्व की खोज अकसर व्यक्ति को विशिष्ट तथा मजबूत बनाती है।

मूल्यों पर प्रश्न उठाना

किशोरावस्था के दौरान अकसर अभिभावकों द्वारा दिए गए संस्कारों पर प्रश्न किए जाते हैं। जो माता-पिता धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं वे अपने पुत्र या पुत्री को यदि धर्म से दूर होते देखते हैं तो उन्हें निराशा होती है।

कभी-कभी इस समय में भविष्य में आजीविका के लिए क्षेत्र चुनने पर भी प्रश्न उठाए जाते हैं। यदि किसी लड़की की माँ चाहती है कि उसकी बेटी नर्स बने पर वह बेटी अचानक से मेडिकल/नर्सिंग स्कूल जाने का भी सोच सकती है और छोड़ने का भी सोच सकती है और वह यह भी निर्णय कर सकती है कि उसे मित्रों के साथ कुछ समय के लिए घर से दूर रहना है। भविष्य को लेकर मातापिता और बच्चों में आमतौर पर वाद-विवाद देखने को मिलते हैं और ऐसी बातें करना बहुत ही आम है कि ''यह मेरी जिंदगी है। मैं जो चाहता/चाहती हूँ, वही करूँगा/करूँगी।''

''बेवकूफ मत बनो। तुम्हारी माँ और मैं यूँ ही चुप खड़े रह कर तुम्हें अपनी जिंदगी बेकार नहीं करने देंगे''।

ऐसा जानना शायद थोड़ी राहत दे कि माता-पिता बच्चों की भविष्य के लिए बनाई गई योजना को स्वीकार कर लेते हैं। वहीं माता-पिता के लिए यह एक राहत की बात होती है कि बच्चे किशोरावस्था में स्थिरता से नहीं सोच पाते ओर इसीलिए उनकी बात मान लें।

उत्तर किशोरावस्था वह समय होता है जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति से घनिष्ठा रखने लगता है। किसी से घनिष्ठता रखने का अर्थ स्वयं को प्रक्रिया में शामिल करना। इरीक्सन महसूस करता है कि घनिष्ठता पहचान के बाद आती है, सबसे पहले आपको स्वयं को जानना होता है ताकि आप दूसरों से भी अपनी बात कर सको। कुछ मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि किसी के साथ घनिष्ठ संबंध जैसे पहला पुरुष या महिला मित्र बनना किसी के अस्तित्व के निर्माण का महत्वपूर्ण अंश होता है।

साथियों (Peer Group) के साथ संबंध

मनोवैज्ञानिक **जेम्स कोलमेन** ने अपने अनुसंधान में एक परिणाम निकाला कि किशोरों की अपनी ही एक उपसंस्कृति होती है। इसमें व्यस्कों के जीवन से अलग अन्य पक्षों पर बल दिया जाता है। **कोलमेन तर्क** करते हैं कि माता-पिता, शिक्षक और उनके बड़े चाहते हैं कि वे अच्छे विद्यार्थी बनें लेकिन किशोर अन्य चीजों को महत्वपूर्ण समझते हैं। लड़कों में, कोई सोच सकता है कि वह अच्छा खिलाड़ी बनें और लड़कियाँ आकर्षक दिखना चाहती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक इन मामलों में पिता का उपस्थित न होना भी महत्वपूर्ण कारक मानते हैं। ऐसे अधिकतर मामलों में कहा जाता है ''पिता घर पर रहते होंगे'', ''पर वह पैसे कमाने में बहुत व्यस्त रहते है जिसके कारण उनके पास बच्चों के लिए समय ही नहीं रहता''। संगति का प्रभाव मजबूत होने लगता है और आप देखेंगे कि सामाजिक स्वीकृति हेतु संपन्न परिवारों के किशोर भी चोरी करते पाए होंगे।

मनोविज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों ने **कोलमन** के दृष्टिकोण के बचाव तथा आलोचना में लेख लिखे हैं। बहुत से समाज शास्त्री कोलमन किशोरावस्था के जीवन की अलग स्थितियों की व्याख्या करने में बहुत आगे तक चले गए। इनका मानना है कि बहुत से किशोर अधिकतर बातों में अपने बड़ों को देखकर ही व्यवहार करते हैं और कुछ ही स्थितियों में वे अपने बड़ों की अपेक्षाओं के विरुद्ध जाते हैं।

बाल अपराधी (Delequent) अथवा किशोरापराधी की संकल्पना

- बाल अपराधी सामान्यत: 9 से 18 वर्ष का बच्चा माना जाता है। समाज के नियमों और व्यवहार के तय मानकों को स्वीकार न करने पर यह स्थिति उत्पन्न होती है। कुछ समाज शास्त्री कहते हैं कि कभी-कभी समाज के नियम अस्पष्ट होते हैं या कभी-कभी निर्धारित भी नहीं होते।
- कुछ सामाजिक वैज्ञानिक मानते हैं कि बाल अपराध का मुख्य कारण उन बच्चों के व्यक्तित्व में ही छिपा है जो इन अपराधों को करते हैं।
- किशोरों द्वारा किए जाने वाले अपराध देश में चली आ रही लंबे समय से एक समस्या है। बहुत से वर्षो से सामाजिक शास्त्री बाल अपराध की सामाजिक आर्थिक व्याख्या करते रहे हैं। अधिकतर बाल अपराध वाद-विवाद के विषय हैं, जिन्हें निम्न आय वाले के शहरी किशोर लड़कों ने अंजाम दिया होता है। वे इसका वर्णन इस तरह करते हैं कि उन्होंने ये अपराध अपने जीवन के बचाव और साथियों में अपने आत्मसम्मान को बढ़ाने व गरीबी से लड़ने के लिए किया।
- इसके बाद सामाजशास्त्री इस नियम में मनोवैज्ञानिक तथ्य भी जोड़ देते हैं। घर में किशोरों द्वारा तभी अपराध होते हैं जब पिता नहीं होते।
- गरीबी और पिता का न होना इस मामले को सहयोग करता है। लेकिन ऐसे बहुत से निम्नवर्गीय परिवार भी हैं, जहाँ पिता नहीं होते परन्तु वे तो ऐसे अपराध नहीं करते, जो इस नियम को पूरी तरह सत्य होने के लिए नकारता है।
- इसके अतिरिक्त, संपन्न परिवारों में भी बात अपराधों की संख्या बढ़ने लगी है। इनमें से अधिकतर अपराधों में सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों को सम्मिलित किया जाता है। सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा इन अपराधों के लिए दी गई व्याख्याएँ उनके अलग-अलग विचारों को दर्शाती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक व्याख्याएँ देते हैं कि कुछ लोगों का व्यक्तित्व हिंसात्मक होता है। कुछ सामाजिक व्याख्याएँ देते हैं कि हम हिंसात्मक समाज में रहते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. विकास शुरू होता है–
(1) गर्भावस्था से (2) शैशवावस्था से
(3) पूर्व बाल्यावस्था से (4) बाल्यावस्था के बाद से

2. मानव विकास को इन क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है–
(1) संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक मनोवैज्ञानिक
(2) मनोवैज्ञानिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और शारीरिक
(3) शारीरिक, आध्यात्मिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक
(4) शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक

3. नैतिक विकास को समझने में एक महत्वपूर्ण अवधारणा समावेशन है, किसने कहा है?
(1) कोह्लबर्ग (2) सिग्मंड फ्रॉयड
(3) मार्टिन हॉफमैन (4) इनमें से कोई नहीं

4. बाल विकास की किस अवस्था में बालक का आकर्षण विषमलिंगी के प्रति अधिक हो जाता है?
(1) शैशवावस्था (2) बाल्यावस्था
(3) किशोरावस्था (4) प्रौढ़ावस्था

5. निम्न में से कौन-सा विकास का सिद्धान्त नहीं है?
(1) विशिष्ट से सामान्य क्रियाओं का सिद्धान्त
(2) निरन्तरता का सिद्धान्त
(3) विभिन्नता का सिद्धान्त
(4) एकीकरण का सिद्धान्त

6. पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बालक 'वस्तु निष्पादन' को प्रदर्शित करता है?
(1) औपचारिक संक्रियात्मक चरण
(2) संवेदीगामक चरण
(3) पूर्व-संक्रियात्मक चरण
(4) मूर्त संक्रियात्मक चरण

7. बच्चों के बौद्धिक विकास के चार विशिष्ट चरणों को प्रतिपादित किया गया–
(1) कोह्लबर्ग द्वारा (2) एरिक्सन द्वारा
(3) स्किनर द्वारा (4) पियाजे द्वारा

8. निम्नलिखित में से किस चरण में बच्चे अपने समवयस्क समूह के सक्रिय सदस्य बन जाते हैं?
(1) किशोरावस्था (2) वयस्कावस्था
(3) शैशवावस्था (4) बाल्यावस्था

9. विकास को साकार करने वाले पर्यावरणीय कारक में निम्नलिखित में से किसके अलावा सभी शामिल हैं?
(1) संस्कृति
(2) शिक्षा की गुणवत्ता
(3) शारीरिक सौष्ठव
(4) पोषण की गुणवत्ता

10. ''विकास अनवरत प्रक्रिया है'', यह विचार संबंधित है–
(1) अन्तर्संबंध का सिद्धान्त
(2) निरंतरता का सिद्धान्त
(3) एकीकरण का सिद्धान्त
(4) अंत: क्रिया का सिद्धान्त

11. बच्चों के भाषायी विकास का महत्वपूर्ण चरण कौन-सा होता है?
(1) शिशु अवस्था में
(2) बाल्यावस्था में
(3) किशोरावस्था में
(4) वयस्क अवस्था में

12. एल्बर्ट बैन्डूरा–
(1) दंड का भय सकारात्मक नैतिक विकास की कुँजी है।
(2) अच्छी शिक्षा सकारात्मक नैतिक विकास की कुँजी है।
(3) स्व: नियमन सकारात्मक नैतिक विकास की कुँजी है
(4) अमूर्त तर्क सकारात्मक नैतिक विकास की कुँजी है।

13. एक बालक की सिर से पैर की ओर विकास की दिशा .... कहलाती है।
(1) सिफेलो-कॉडल (2) समीप से दूर
(3) कोडो-सिफेलिक (4) दूर से समीप

14. प्रारंभिक शिशु देखभाल एवं शिक्षा को कहा जाता है :
(1) ICDS (2) ECCE
(3) MDMS (4) DIET

15. ''किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।''–यह कथन है :
(1) रम्सफील्ड का (2) ई.ए. किल्पैट्रिक का
(3) सिम्पसन का (4) स्टेनली हॉल का

16. बाल्यावस्था को 'संवेगात्मक विकास का अनोखा काल' कहा है–

(1) ई. एल. थॉर्नडाइक

(2) जे.बी. वाटसन

(3) बी.एफ. स्कीनर

(4) कोल एवं ब्रुश

17. तीव्र शारीरिक विकास की अवस्था मानी जाती है–

(1) शैशवावस्था (2) बाल्यावस्था

(3) किशोरावस्था (4) वयस्कावस्था

18. प्युबर्टी (Puberty) का तात्पर्य किस अवस्था से सम्बद्ध है?

(1) शैशवावस्था (2) बाल्यावस्था

(3) किशोरावस्था (4) वयस्कावस्था

19. विकास का सम्बन्ध होता है–

(1) मात्रात्मक (2) गुणात्मक

(3) भावात्मक (4) इनमें से सभी

20. मानवीय विकास कुछ निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित होता है। इनमें से कौन-सा सिद्धांत मानवीय विकास का नहीं है?

(1) शृंखलाबद्ध (2) सामान्य से विशेष

(3) प्रतिवर्ती (4) निरंतरता

21. अवधारणाओं का व्यवस्थित प्रदर्शन निम्न में से किन सिद्धान्तों के विकास से संबंधित है?

(1) विकास प्रगति की ओर ले जाता है।

(2) विकास अधीनता से स्वायत्ता की तरफ ले जाता है।

(3) बच्चे विभिन्न दरों से विकसित होते हैं।

(4) विकास अपेक्षाकृत व्यवस्थित है।

22. ब्लूम का वर्गीकरण श्रेणीबद्ध संगठन है–

(1) उपलब्धि लक्ष्य

(2) पाठ्यक्रम घोषणाएँ

(3) पठन कौशल

(4) संज्ञानात्मक उद्देश्य

23. डे केयर क्या है?

(1) बच्चों की देखभाल की प्रक्रिया

(2) बच्चों के लिए निवास केन्द्र

(3) बच्चों के अधिगम की प्रक्रिया

(4) शिशुओं के लिए निवास केन्द्र (0-10 वर्ष)

24. एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक .... से विशेषताएँ पहुँचती हैं।

(1) आनुवंशिकता (2) जीन

(3) पर्यावरण (4) गुणसूत्र

25. लिंगों की पारम्परिक भूमिका से तात्पर्य है–

(1) पुरुष कार्य करने के लिए बाहर जाता है और महिला घर संभालती है।

(2) पुरुष घर संभालता, और महिला कार्य करती है।

(3) पुरुष-महिला दोनों कार्य पर जाते हैं।

(4) इनमे से कोई नहीं

संक्षिप्त उत्तरमाला

1.	(2)	**2.**	(4)	**3.**	(1)	**4.**	(3)	**5.**	(1)
6.	(4)	**7.**	(4)	**8.**	(1)	**9.**	(3)	**10.**	(2)
11.	(3)	**12.**	(3)	**13.**	(1)	**14.**	(2)	**15.**	(4)
16.	(1)	**17.**	(1)	**18.**	(3)	**19.**	(4)	**20.**	(3)
21.	(4)	**22.**	(4)	**23.**	(2)	**24.**	(1)	**25.**	(1)

उत्तर व्याख्या सहित

1. (2) विकास निरंतर और जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। यह शैशवावस्था अर्थात् शिशु के जन्म के साथ आरंभ होता है और व्यक्ति की मृत्यु के साथ समाप्त होता है। इसमें व्यक्ति का संपूर्ण जीवन-काल शामिल है।

2. (4) मानव विकास के प्रमुख क्षेत्र हैं–शारीरिक, बौद्धिक (संज्ञानात्मक), संवेगात्मक, (भावात्मक), नैतिक, सौंदर्यात्मक और सामाजिक विकास।

3. (1) कोह्लबर्ग के अनुसार नैतिकता विकास की सार्थक समावेशी समझ पैदा करती है जो कि आंतरिक मानकों व सिद्धान्तों द्वारा नियंत्रित होता है।

4. (3) किशोरावस्था विकास तथा समायोजन का वह समय है जो बचपन तथा प्रौढ़ अवस्था में अन्तरकालीन समय होता है। किशोर-किशोरियों में इसी अवस्था में एक-दूसरे के प्रति बहुत आकर्षण उत्पन्न होता है।

5. (1) सामान्य से विशिष्ट की ओर का सिद्धान्त चिंतन-तर्क से सम्बद्ध है। बालक पहले सामान्य वस्तुएँ और बाद में विशिष्ट या विशेष बातें सीखता है। उदाहरण के लिए शब्दावली का निर्माण करने में बालक पहले सामान्य शब्द और बाद में विशिष्ट शब्द सीखता है।

6. (4) इस अवस्था की एक विशेषता है बालक की वस्तुओं को वर्गीकृत करने, समूह बनाने तथा उन्हें क्रमिक रूप से व्यवस्थित करने एवं उनके बीच संबंध को समझने में समर्थ हो जाता है।